श्री गणेश वन्दना

(तर्ज : सर्व सुहागण मिल...)

अरज गुजारूँ देवा बेगा बेगा आओ,
थे रिद्ध सिद्ध सागे ल्याओ जी गणपत जी ।। टेर ।।

श्याम धणी रो देवा किर्तन माण्डयो,
थे आकर सफल बणाओ जी गणपत जी ।। १ ।।

विघ्न विनाशक देवा आप कुहावो,
थे सगला विघ्न हटाओ जी गणपत जी ।। २ ।।

लाडुड़ा सूं भर देवा थाल सजाया,
थे आकर भोग लगाओ जी गणपत जी ।। ३ ।।

'हर्ष' भगत देवा थारा गुण गावे,
थे अटक्या काम बणाओ जी गणपत जी ।। ४ ।।

श्री गुरु वन्दना

(तर्ज : संसार है इक नदिया...)

सतगुरु के चरणों में, बस मेरा ठिकाना है,
चरणों में छुपा तेरे, गुरु ज्ञान खजाना है ।। टेर ।।

मोहमाया में फँसकर, तुझको ही मैं भूल गया,
जो शरण पड़ा तेरी, ''झट तूने कबूल किया''-२,
अब ज्ञान का ह्रदय में, इक दीप जलाना है ।। १ ।।

मैं भटक रहा कबसे, मंजिल ही नहीं मिलती,
सूने मन उपवन में, ''कलियाँ ही नहीं खिलती''-२,
मेरे मन का मुरझाया, वो फूल खिलाना है ।। २ ।।

अंधियारा मिटा दो तुम, प्रभु-महिमा मैं गाऊँ,
संतों के समागम में, ''भीतर तक रम जाऊँ''-२,
इस 'हर्ष' को मुक्ति का, रस्ता दिखलाना है ।। ३ ।।

श्री पितरेश वन्दना

(तर्ज : दुनिया चले ना...)

पित्तरों का मन से तू ध्यान धर ले,
कुल के देवों का सम्मान कर ले ।। टेर ।।

पित्तरों की ज्योत सवाई है,
करती ये हरदम सहाई है,
ज्योत जगाके शुभ काम करले ।। १ ।।

कष्टों से हमको बचाते हैं,
विपदा का भान कराते हैं,
पित्तरों की महिमा बखान करले ।। २ ।।

मन से जो इनको ध्याता है,
बेटा व धन वो पाता है,
पित्तरों का नाम सुबह शाम जपले ।। ३ ।।

देश दिशावर जाओगे,
'हर्ष' इन्हें संग पाओगे,
पित्तरों का प्यारे गुणगान करले ।। ४ ।।

श्री हरि वन्दना

(तर्ज : ऐ श्याम तुम्हें देखूँ...)

जाने कब आ जायेगा, तेरा बुलावा मेरे राम,
करने है बहुत से काम ।। टेर ।।

बेटे को पढ़ा करके, इन्सान बनाना है,
बेटी भी सयानी हुई, मुझे उसको ब्याहना है,
प्रभु यूँ ही न दे देना, इस जीवन को विराम,
करने है बहुत से काम ।। १ ।।

माँ बाप की सेवा करूँ, मुझे इतना समय देना,
बहना का भात भरूँ, प्रभु इतना कर देना,
प्रभु यूँ ही ना ढ़ल जाये, मेरे जीवन की ये शाम,
करने है बहुत से काम ।। २ ।।

परिवार कबीले का, मुझे कर्ज चुकाना है,
पत्नि के प्रति भी मुझे, कुछ धर्म निभाना है,
प्रभु इतना मुझे देना, तेरी दया का दान,
करने है बहुत से काम ।। ३ ।।

जब काम हो सब पूरे, तीरथ करने जाऊँ,
संतो के संग डोलूं, महिमा तेरी गाऊँ,
फिर 'हर्ष' तो आयेगा, हँसते हुए तेरे धाम,
करने है बहुत से काम ।। ४ ।।

(तर्ज : स्वरचित)

कैसी है राम ये तेरी माया,
अपनों से दूर होता, अपनों का साया ।। टेर ।।

उँगली पकड़ के जिसने, हमको चलना सिखाया,
जीवन की खुशियों को, हमने जिससे पाया,
मुझे राह दिखाने वाले को क्यूँ, तूने बुलाया ।। १ ।।

विपदाओं में जिसने, हमको हँसना सिखाया,
पोंछ के आँसू मेरे, सिरपे हाथ फिराया,
मेरा दर्द मिटाने वाले को क्यूँ, तूने बुलाया ।। २ ।।

'हर्ष' कहे ये तूने, कैसा खेल रचाया,
लाख जतन करके भी मैं, उसको रोक न पाया,
उस प्यार लुटाने वाले को क्यूँ, तूने बुलाया ।। ३ ।।

(तर्ज : स्वरचित)

मुख राम रहे मन पाप बसे, किर्तन करने से क्या होगा,
जब मन की तृष्णा मिटी नहीं, तो हरि भजन से क्या होगा ।।

मुख से उसका जाप करे तू, मन में रमी बुराई,
मुँह में राम बगल में छूरी, होगी नहीं भलाई,
मोह माया को छोड़ तभी तो, पापों से चुकता होगा ।। १ ।।

क्या लेकर के आया है तू, क्या लेकर के जायेगा,
माल खजाना तेरा बन्दे, यहीं धरा जायेगा,
राम नाम ही सीधा सच्चा, मुक्ति का रस्ता होगा ।। २ ।।

तेरे मेरे के चक्कर में, ध्यान लगा है तेरा,
बाहर से तू उजला है, तेरे मन में घना अंधेरा,
राम नाम का दीप जलाले, 'हर्ष' तभी रोशन होगा ।। ३ ।।

(तर्ज : जाने वाले इक संदेशा...)

शुद्ध अशुद्ध का छोड़ के चक्कर, उजले मन से दर पे आ,
जिसे समझता शुद्ध तू सेवक, आ तुझको दूँ भेद बता ।। टेर ।।

मोर पंख सिर पे मैं धारूं, जिसमें मोर का मांस लगा,
गोलोचन का तिलक लगाऊँ, गऊओं के सींगों से बना,
मस्तक पे कस्तूरी टीका, हरिन की नाभि से निकला ।। १ ।।

पीत वसन रेशम का पहनूं, कीड़ो की भिष्ठा है ये,
गोमाता की पूँछ से निर्मित, चँवर ढुले मेरे दर पे,
भेंड़ के बालों से जो बनती, ऊन का ही आसन है बना ।। २ ।।

हाड़ के शंख में पानी पीता, बजे नगाड़ा चमड़े का,
ऊँट की खाल में बरसों रहता, इत्र ये मेरे कपड़े का,
भैंसे की चमड़ी से बनता, नौबत दर पे बाज रहा ।। ३ ।।

मगर मच्छ की थैली से इक, प्यारी सी खुशबू निकले,
'हर्ष' उसी से अगर है बनता, मंदिर में दिन रात जले,
तन को भिगोना ही शुद्ध होता, मेंढक स्वर्ग में ही रहता ।। ४ ।।

(तर्ज : सन्तो सुरगां सू आग्यो टेलीफोन)

लाडो, होगी सयाणी मेरा श्याम, करादे पीला हाथ रे-२ ।।

बिन मायत की बेटी ने प्रभु, देसी कुण बिदाई-२,
बाप धर्म को बणके कान्हा, दीजे तू डोली मे बिठाय,
करादे पीला हाथ रे ।। १ ।।

बिन मामा के पाटे चढ़कर, चुनड़ी कुण उढ़ावे-२,
श्याम धर्म को मामो बणके, दीजे तू भात भराय,
करादे पीला हाथ रे ।। २ ।।

बिन बीरे के आवभगत भी, कुण करे लो आज-२,
ग्वाल बाल संग आय साँवरा, लीजे बाराती ने सम्भाल,
करादे पीला हाथ रे... ।। ३ ।।

बिन दौलत ना देणे पाऊँ, दान दायजो नाथ-२,
'हर्ष' दीन की लाज राखले, सिर पे फिरादे तेरो हाथ,
करादे पीला हाथ रे... ।। ४ ।।

(तर्ज : सोने जैसा रंग है तेरा..)

दो दिन का है जग में बसेरा,
मन की आँखे खोल,
मीठे बोल तु बोल रे मनवा, मीठे बोल तु बोल ।। टेर ।।

हरि कृपा से नर तन पाया, इसको यूँ ना गवाँना,
इक दिन सब कुछ छोड़ के बन्दे, तुझको जग से जाना,
जीवन है बड़ा अनमोल, मीठे बोल तु बोल ।। १ ।।

मुख से जब भी बोलो मनवा, मीठी वाणी बोलो,
औरों को शीतल कर डालो, खुद भी शीतल होलो,
मन में पहले मनवा तोल, मीठे बोल तु बोल ।। २ ।।

'हर्ष' कहे मानव की बोली, उसके मन का दर्पण,
मीठी बोली बोल के मनवां, खुद को करदे अर्पण,
अपने मुख में मिसरी घोल, मीठे बोल तु बोल ।। ३ ।।

(राग रचयिता - राजेश चतुर्वेदी)

विषयों मनवा डोले और माया में भरमाये,
ये हीरा जन्म तुम्हारा तो बातों में बीता जाये ।। टेर ।।

मुश्किल से जो ये तूने, दौलत कमाई,
पर साथ जायेगी ना, ये तो है पराई,
तेरे साथ कोई ना जाये, साँसे धोखा दे जाये ।। १ ।।

गुलशन नहीं है ये तो, माया का जंगल,
समझे सुधा तू जिसको, वो है हलाहल,
मद् काम लोभ मन भाये, माया में भटका जाये ।। २ ।।

तन तो तुम्हारा 'हर्ष', काठ की नैया,
हरि नाम भव सिन्धु में, बनेगा खिवैया,
हरि कर्ज चुका ना पाये, तू ऋणिया ही रह जाये ।। ३ ।।

(तर्ज : ओ बाबुल प्यारे...)

ओ मनवा गाऽऽऽऽ रेऽऽऽऽ,
भजन की है बेला प्यारे,
हरि को काहे भूला रे,
यहाँ दो दिन का मेला रेऽऽऽऽ ।। ओ मनवा... ।। टेर ।।

बरसों का तूने जतन किया रे, पल का नहीं है ठिकाना-२,
तेरे घोड़े ये हाथी, प्यारे कुछ पल के साथी,
तू अकेला करेगा सफर ।। ओ मनवा... ।। १ ।।

मर मर के तूने द्रव्य कमाया, तेरे वो काम न आये-२,
तेरे कोठी ये बंगले, संग ना जायेंगे पगले,
तेरे तन पे तो होगा कफन ।। ओ मनवा... ।। २ ।।

'हर्ष' भुलादे पीछे की सारी, आगे की तू सुध लेले-२,
जिनको अपना माने रे, वो तो है बेगाने रे,
तेरे साथी हैं तेरे करम ।। ओ मनवा... ।। ३ ।।

(तर्ज : बड़ी दूर से आये हैं...)

तूने पुण्य कमाया है, बावरे, नर तन पाया है,
सत्कर्मों को अपना ले, बावरे, नर तन पाया है ।। टेर ।।

ये प्रभु की, किरपा है, ये चोला तूने पाया,
मोह विषय में ऽऽऽऽ, तू फूले ना समाया,
रे मनवा, रे मनवा, रे मनवा क्यूँ भरमाया है,
बावरे नर तन... ।। १ ।।

सत्कर्मो को, खाते में, तू जोड़े चला जा रे,
'हर्ष' बदी को ऽऽऽऽ, तू छोड़े चला जा रे,
प्रभु की, प्रभु की, किरपा पाया है,
बावरे नर तन... ।। २ ।।

(तर्ज : रमैया वस्तावैया...)

रंग ले मन ये तेरा, रंगले तन ये तेरा-२,
चाहे रंग राम रंगो, चाहे घनश्याम रंगो ।। टेर ।।

लेके आया है क्या, लेके जायेगा क्या,
तेरा सब कुछ यहाँ पर रहेगा धरा-२,
अरे इन्सान जगो, अरे इन्सान जगो,
चाहे रंग राम... ।। १ ।।

ये है माटी का तन, थोड़ा करले जतन,
क्यूँ ना परलोक अपना सुधारे यहीं-२,
हरि गुणगान करो, हरि का ध्यान धरो,
चाहे रंग राम... ।। २ ।।

तेरी मेरी तजो, प्रभु नाम भजो,
'हर्ष' कहता यही तेरे काम आयेगा-२,
श्री चरणों में झुको, श्री चरणों में झुको,
चाहे राम रंग... ।। ३ ।।

(तर्ज : छोड़ दे सारी दुनिया...)

दोहा : तोल जरा ऐ मेरे साथी, मुखड़ा पीछे खोल रे ।
मिश्री सी बनके कान में, तू प्यारे अमृत घोल रे ।।

मेट देती दवा दर्द तलवार का,
घाव बोली का फिर भी न भरता कभी,
हाथ की चोट को भूल जाये कोई,
बात की चोट को भूल सकता नहीं ।। टेर ।।

पूत अन्धे का जब द्रोपदी ने कहा,
'कोरवों के दिलों में कटारी लगी''-२,
सबके होते हुए चीर जब वो हरे,
'उस सभा में पांचाली बेचारी लगी''२,
लाज रखी थी आकर के घनश्याम ने,
पाँच पतियों की नारी अभागन बनी ।।

(2)

पाँच नन्दी के संग में गऊ थी खडी,
''मैया गिरिजा ने हँस करके ताना दिया''२,
शाप दे डाला गिरिजा को गौ माता ने,
''क्यूँ हँसे होगें तेरे भी पाँच पिया-२'',
बात सच्ची हुई गिरिजा बन द्रोपदी,
पाँच पाण्डव की द्वापर में रानी बनी ।।

बात कड़वी कभी मुख से बोलो नहीं,
''बात जैसी ना दूजी कोई मार है''-२,
रात दिन जिसकी पीड़ा सताती रहे,
''एक ऐसी दुधारी वो तलवार है''-२,
'हर्ष' कहने के पहले ही तोलो जरा,
मुख से निकला दुबारा तो आता नहीं ।।

(तर्ज : बनाके क्यूँ बिगाड़ा रे...)

ये माटी में मिल जायेगी-२, मिल जायेगी रे बन्देऽऽऽ,
कंचन काया, ये कंचन काया ।। टेर ।।

उस मालिक ने सब जीवों में, तुझको श्रेष्ठ बनाया है,
मोह माया में फँस कर तूने, जीवन व्यर्थ गँवाया है,
सत्कर्मों के, खातिर तूने, तो पाई है रे बन्देऽऽऽ,
कंचन काया, ये कंचन काया ।। १ ।।

हर पल तेरी साँसें घटती, जीवन एक झमेला है,
जगत जाल में आन फँसा तू, खुद को ऐसा भूला है,
समझा है तूने, इसको अपना, पराई है रे बन्देऽऽऽ,
कंचन काया, ये कंचन काया ।। २ ।।

तेरी मेरी करते करते, निकल गये दिन ये तेरे,
सिर पे लादे पाप की गठरी, काहे भटकता तू प्यारे,
'हर्ष' रहे ना, यूहीं हमेशा, सवाई तेरी बन्देऽऽऽ,
कंचन काया, ये कंचन काया ।। ३ ।।

(तर्ज : क्या मिलिये ऐसे लोगों...)

झूठी शान बघारेगा तू, फिर पीछे पछतायेगा,
जरा सोच ले ऐसा करके, क्या हासिल कर पायेगा ।। टेर ।।

आज दिखावे के चक्कर में, शादी कारोबार बनी,
बनिये मोदी हलवाई और, माली का व्यापार बनी,
फूँक रहा तू व्यर्थ में दौलत, क्या तुझको मिल जायेगा ।। १ ।।

कुछ घण्टों की खातिर तूने, अपनी शान बढ़ाली है,
जीवन भर की आफत लेकिन, अपने पीछे पाली है,
बिन सामर्थ के खर्च करे तो, कर्ज तले दब जायेगा ।। २ ।।

व्यर्थ लुटाने से तो अच्छा, बच्चों के ही नाम करो,
रहे सुखी दोनों का जीवन, ऐसा सुन्दर काम करो,
'हर्ष' कहे वरना तू इकदिन, मुँह काला करवायेगा ।। ३ ।।

(तर्ज : बचपन की मोहब्बत को...)

मेहनत की कमाई को, ऐसे ना लुटाना तू,
खर्चों को घटा करके, सेवा में लगाना तू ।। टेर ।।

राई से राई मिले, पर्वत बन जाता है,
जब बूंद से बूंद मिले, सागर बन जाता है,
खुद को समरथ करके, दुनिया को दिखाना तू ।। १ ।।

मंहगाई के युग में, पैसे का ही खेला है,
जिसने दौलत जोड़ी, यहाँ उसका रेला है,
यूँ व्यर्थ गँवा करके, पीछे पछताना तू ।। २ ।।

जो खर्च ही करना है, इन्सान पे खर्च करो,
दीनों की मदद करो, दुखियों के दर्द हरो,
ऐ 'हर्ष' तेरी माया, नेकी में लगाना तू ।। ३ ।।

(तर्ज : थाने काजलियो बणाल्यूँ...)

जागो जागो ऐ इन्सान, त्यागो त्यागो झूठी शान,
बेटी वाले का दिल ना दुखाना रे ।। टेर ।।

होवे बाबुल की गर ना समाई रे, समाई-२,
बेटी करनी है फिर भी पराई रे, होऽऽऽ
सुख देगा और को तो, मौज उड़ायेगा तू प्यारे, मौज उड़ायेगा रे,
ये है विधि का विधान, तेरा भला करे भगवान ।। बेटी वाले ...

जिसने बचपन से लाड लडाया रे, लडाया-२,
दुनिया-दारी का ज्ञान कराया रे, होऽऽऽ
सुख देगा और को तो, मौज उड़ायेगा तू प्यारे, मौज उड़ायेगा रे,
छोड़ो छोड़ो अभिमान, छोड़ो नकली आन बान ।। बेटी वाले ...

बेटे वाला क्यूँ बन इतराया रे, इतराया-२,
अपनी मर्यादा काहे भुलाया रे, होऽऽऽ
सुख देगा और को तो, मौज उड़ायेगा तू प्यारे, मौज उड़ायेगा रे,
खोलो खोलो अपने कान, सुनलो थोड़ा धर के ध्यान ।। बेटी वाले ...

'हर्ष' पगड़ी किसी की ना उछालो रे, उछालो -२,
अपने समधि को गले से लगालो रे, होऽऽऽ,
सुख देगा और को तो, मौज उड़ायेगा तू प्यारे, मौज उड़ायेगा रे,
सबसे ऊँचा कन्यादान, बेटी वाला है महान ।। बेटी वाले ...

(तर्ज : सेठों की क्या करे नौकरी...)

परिणय है इक पावन बंधन, रिश्तों का आधार यही,
जरा सम्भल ये बन ना जाये, नोटों का व्यापार कहीं ।। टेर ।।

एक नहीं दो बार यहाँ पर, रस्म सगाई होती है,
कागज के बदले चाँदी की, मेल मिलाई होती है,
भाँत भाँत के पकवानों की-२, लम्बी लगे कतार यहीं ।। १ ।।

रोका रोकी से शादी तक, खूब मिठाई बँटती है,
चकाचौंध के पीछे देखो, गाढ़ी कमाई लुटती है,
झूठी शान दिखावा है सब-२, इन सबकी दरकार नहीं ।। २ ।।

आओ ये संकल्प करें अब, ऐसा ना हो पायेगा,
समधी के घर बेटी वाला, कभी अन्न ना खायेगा,
बेटी के घर किसी बाप को-२, खाने का अधिकार नहीं ।। ३ ।।

विवाह सूत्र दो परिवारों का, जन्म जन्म का बंधन है,
एक डगर के दो पथिकों का, बड़ा ही प्यारा संगम है,
'हर्ष' चलें मर्यादित होकर-२, अपना है संस्कार यही ।। ४ ।।

(तर्ज : तूने अजब रचा भगवान...)

तेरे खर्च घटा इन्सान कमाई थोड़ी रे,
तेरी हालत तू पहचान कमाई थोड़ी रे ।। टेर ।।

बिन सामर्थ्य क्यूँ खर्च बढ़ाता,
आफत को तेरे पास बुलाता,
तेरा भला करे भगवान, कमाई थोड़ी रे ।। १ ।।

मुश्किल से परिवार चलाये,
बिन चाहे खरचे जब आये,
तू कैसे रहे धनवान, कमाई थोड़ी रे ।। २ ।।

'हर्ष' व्यर्थ के खर्च घटाओ,
थोड़ा थोड़ा करके बचाओ,
कहीं बिक ना जाये ईमान, कमाई थोड़ी रे ।। ३ ।।

(तर्ज : क्या मिलिये ऐसे...)

धन की गतियाँ तीन जगत में, दान, भोग और नाश रे मन,
दान, भोग में गर न लगा तो, निश्चय होगा नाश रे मन ।। टेर ।।

जल को पीने से तो मनवा, जल की प्यास सदा मिटती,
लेकिन ज्यूँ ज्यूँ धन मिलता है, धन की प्यास सदा बढ़ती,
धन से नोकर मिल सकता पर, मिलता ना विश्वास रे मन ।। १ ।।

सुख सैया धन से ही मिलती, सुख की नींद कहाँ मिलती,
पोथी पुस्तक चाहे ले लो, ज्ञान की खान कहाँ मिलती,
घर तो कभी न मिलता धन से, मिलता है आवास रे मन ।। २ ।।

दुर्लभ चीजें पा सकते हो, दिल का चैन न पाओगे,
मिले मान्यता धन से मनवा, पर सम्मान न पाओगे,
प्यार न मिलता कभी भी धन से, मिलता भोग विलास रे मन ।।३।।

भोग सके तो भोग ले धन को, फिर पीछे पछतायेगा,
लगा सका जो दान धरम में, भव से तू तर जायेगा,
'हर्ष' तिजोरी धन बदलेगा, रहेगा क्या तेरे पास रे मन ।। ४ ।।

(तर्ज : दिल डिंग डांग डिंग बोले...)

ये भांग की दीवानगी तेरे सिर चढ़ के बोले,
तू आ भी जा खाले जरा ओ शिव शंकर भोले ।। टेर ।।

तुझपे तो छाये, इसकी खुमारी, जाने है सेवक, आदत तुम्हारी,
तेरे द्वार पे लेकर खड़े, ये भंगिया के गोले,
तू आ भी जा... ।। १ ।।

मैया के हाथों, हरदम ही खाये, भंगिया घुटवा के, सेवक है लाये,
तेरे नाम की धूनी लगा, ये मस्ती में डोले,
तू भी आ जा... ।। २ ।।

तू है दिवाना, भंगिया का भोले, तेरा दिवाना, तुझसे क्या बोले,
तेरे दास की बाबा बता, क्यूँ भगती को तोले,
तू आ भी जा... ।। ३ ।।

भंगिया नहीं ये, श्रद्धा हमारी, 'हर्ष' मैं चाहूँ, किरपा तुम्हारी,
तेरा दास हूँ जनमों से मैं, तू ही किस्मत खोले,
तू आ भी जा... ।। ४ ।।

(तर्ज : चढ्यो फागणीये को रंग...)

- दोहा -

जटा में तेरे गंग विराजे, गल सर्पों का हार ।
फक्कड़ भेष बना कर बैठा, जग का सिरजन हार ।।
हाथ कमण्डल सोहे तेरे, भोले दया निधान ।
अंग विभूति लगा के बाबा, धरते किसका ध्यान ।।

- स्थाई -

मेरे भोले भण्डारी, तेरी माया बड़ी भारी,
सारे तन पे तू भष्मी रमाये रे,
बैठा किसका तू ध्यान लगाये रे ।। टेर ।।

- अन्तरा -

मस्तक तिलक तेरे, माथे चन्दा सोहे,
बड़े-बड़े कुण्डल भोला, कानों में संजोये,
भोला भांग तुम्हारी, घोटे गौरा माँ बेचारी,
मेरी मैया को क्यूँ इतना सताये रे,
बैठा किसका तू ध्यान लगाये रे... ।। १ ।।

(2)

ओढ़े हो बाघम्बर तेरे, गल सर्पों की माला,
जटाजूट में गंग बिराजे, बैठन को मृगछाला,
साधु वेष बनाये, और चिमटा बजाये,
भोले बाबा कैसा स्वांग रचाये रे,
बैठा किसका तू ध्यान लगाये रे, ... ।। २ ।।

हाथ में त्रिशूल तेरे, डमरू विराजे,
द्वारे तेरे नन्दी बाबा, छम छम नाचे,
'हर्ष' कहे त्रिपुरारी, बैठा बनके भिखारी,
तेरी लीला कोई समझ ना पाए रे,
बैठा किसका तू ध्यान लगाये रे, ... ।। ३ ।।

---ooo---

(तर्ज : इश्क में जब जी घबराया...)

भोले-भोले, भोले-भोले, मेरे भोले-भोले, मेरे भोले-भोले,
याद में, जब जी भर आया, आँखों नें, आँसू टपकाया,
तेरा दिवाना रुक ना पाया दौड़ा आया ।। टेर ।।

तेरी ही पूजा, तेरी इबादत,
हो गई मुझको, तुझसे मोहब्बत,
तेरे प्यार में मैंने अपना होश गँवाया ।। १ ।।

अपनों से बोलो, कैसी ये दूरी,
कहदे तू मुझसे, क्या है मजबूरी,
तेरे दिवाने को क्यूँ तूने दिल से भुलाया ।। २ ।।

ये 'हर्ष' तुम्हारे, दर पे खड़ा है,
चरणों का चाकर, जिद पे अड़ा है,
तेरे भगत को अब तक क्यूँ ना दरपे बुलाया ।। ३ ।।

श्री भूतनाथ वन्दना

(तर्ज : कौन दिशा में लेके...)

काली की नगरिया में भोले की दुअरिया,
बैठे तारा माँ के साथ, मेरे बाबा भूतनाथ,
चलो दर्शन को, दर्शन को... ।। टेर ।।

गंगा तट पर भूतनाथ का, भक्तों पावन धाम है,
शमशानों का वासी है ये, सारे जग में नाम है,
दुनिया आकर शीश झुकाये-२, दर पे सुबहो शाम है,
दूध चढ़ाये रे चढ़ाये कोई भंगिया, बैठे तारा माँ के ...।। १ ।।

जलते मुर्दे की भस्मी से, आरती इनकी होत है,
ज्योतिर्लिंगो के सम पावन, भूतेश्वर की ज्योत है,
काला टीका हर माथे पर-२, सोहे बनके भभूत है,
भर के चढ़ाये कोई जल की गगरिया, बैठे तारा माँ के .. ।। २ ।।

सोमवार के दिन की भक्तों, महिमा बड़ी महान है,
आने वाले हर सेवक को, मिलता दया का दान है,
'हर्ष' दिवाना भोले तेरा-२, रोज करे गुणगान है,
नाम पे तेरे नाचूं बीच बजरिया, बैठे तारा माँ के ... ।। ३ ।।

श्री शंकर वन्दना

(तर्ज : तेरे हाथों की लकीर...)

बम भोले का तू ध्यान लगाले, जरा जल की गगरिया उठाले,
तू बाबा की जयकार करले,
मेरे भोले सा नहीं कोई दानी, तू जाके भण्डार भरले ।। टेर ।।

बड़ा ही निराला मेरा बाबा भोला भाला है,
जल की गगरिया से खुश होने वाला है,
पल भर में ये वर देने वाला, तकदीर का खोले ताला,
तू बाबा की जयकार करले... ।। १ ।।

बिना रूके भोले जी के दर पे जो जाता है,
मेरा बाबा उसकी तो बिगड़ी बनाता है,
पैरों में पड़े चाहे छाले, ना रूकना ओ चलने वाले,
तू बाबा की जयकार करले... ।। २ ।।

मन से तू जाके इसे जल को चढ़ायेगा,
'हर्ष' मुरादें भोले बाबा से तू पायेगा,
ये देव बड़ा मतवाला, भगतों का है रखवाला,
तू बाबा की जयकार करले... ।। ३ ।।

(तर्ज : मैं जट यमला पगला...)

तुझे कहते हैं लोग मलगां ओ बाबा बहती जटा में गंगा,
ये जग तेरा नाम जपता है, भोले तेरा ध्यान धरता है ।। टेर ।।

शमशानों में बैठ के अलख जगाते हो,
ओघड़दानी जग में तुम कहलाते हो,
तन पे बाघम्बर सोहे, बैठन को मृगछाला,
चिमटा बजाये तेरा भेष है निराला,
शीश पे सोहे तेरे चन्दा, हो चन्दा, हो चन्दा ।। १ ।।

राम नाम की धुन में, सुध बिसराते हो,
अपने सारे तन पे भभूत रमाते हो,
आक धतूरे का तू, भोग लगाता है,
भर भर लोटा भोला, भंगिया चढ़ाता है,
कण्ठ पे नाचे है भुजगां, भुजगां, भुजगां ।। २ ।।

'हर्ष' कहे तू सारे जग का पालक है,
बाबा शरण में आया तेरा बालक है,
हाथ में त्रिशूल तेरे, डमरू विराजे,
छम छम छम भोला, नन्दी तेरा नाचे,
मेटदे यम का फन्दा, ये फन्दा, ये फन्दा ।। ३ ।।

(तर्ज : कान में झुमका चाल में ठुमका...)

कान में कुण्डल, जटा में गंगा, गले में विषधर लटके,
अंग विभूति लगाके बैठे, लगे दयालू हटके,
ओ तेराऽऽऽ, भेष है निराला,
तेरा ढंग है निराला... ।। टेर ।।

शीश में चंदा साजे है, नन्दी दर पे नाचे है,
चिमटा बजाये बाबा, धूनी रमाये तू,
पहने बाघ की छाला है, गल सर्पों की माला है,
बन कर फकीर भोला, अलख जगाये तू,
भेष ये सुहाना, मेरा दाता, ऐ विधाता,
दिल लुभाता मेरा, चैन ये चुराए,
भंगिया के तू भर भर प्याले, दीन दयालू गटके,
अंग विभूति लगाके बैठे, लगे दयालू हटके... ।।

(2)

तेरे नाम से मेरा संसार चलता,
तू दिन रात सेवक के दामन को भरता,
तुझे पूज कर अपना तन मन सवारूँ,
तुम्हारी दया से मैं जीवन गुजारूँ,
तेरा बना हूँ, मैं दिवाना, मस्ताना,
ना भुलाना मुझे, मेरे दयालू,
इस सेवक के नैन तुम्हारी, चौखट पर है अटके,
अंग विभूति लगाके बैठे, लगे दयालू हटके... ।।

शमशानों का वासी है, भूतों का तू साथी है,
आक धतूरा बाबा, भोग लगाए तू,
सेवक का सम्मान करे, भक्तों का कल्याण करे,
अपने भगत के सारे, दुखड़े मिटाये तू,
''हर्ष'' को दरपे बुलाके, मुस्काके,
बनाके तेरा, दास बिठाले,
तेरे होते तेरा सेवक, दर दर काहे भटके,
अंग विभूति लगाके बैठे, लगे दयालू हटके... ।।

(तर्ज : चली काँवड़ियों की टोली...)

लेके मैया जी का नाम, चले वैष्णो के धाम,
सारे पौड़ी पौड़ी चढ़ते ही जाये रे,
मातारानी की जयकार लगाये रे ।। टेर ।।

नंगे नंगे पैरों सारे चलते ही जाये,
रूक नहीं पाये चाहे छाले पड़ जाये,
''झूमे नाचे और गाये-२'', ढ़ोल ढफली बजाये-२,
माँ को मीठे मीठे भजन सुनाये रे ।। १ ।।

बच्चे बूढ़े नर नारी माँ के दर जाते,
मन की मुरादें माता रानी से वो पाते,
''छोटी कन्यायें जिमाये-२'', हाथों चरण धुलाये-२,
चने हलवे का भोग लगाये रे ।। २ ।।

(2)

ऊँचे ऊँचे रस्ते हैं ऊँची है डगरिया,
ऊँचा है भवन माँ का ऊँची है दुअरिया,
''ऊँचे भगतों के इरादे''-२, पाते मैया से मुरादे-२,
माँ को लाल लाल चुनरी उढ़ाये रे ।। ३ ।।

माँ की गुफा में जाके सिर को झुकाते,
माता को मनाये पीछे भैरों घाटी जाते,
'हर्ष' बोले ये नजारा''-२, लागे भगतों को प्यारा-२,
माता भगतों की झोलियाँ भराये रे ।। ४ ।।

थोक में गायक यहाँ पर पाओगे बाजार में,
पर मिलेगा श्याम सेवक सैंकड़ों हजार में ।
लेखकों की क्या कहूँ, ईमान ही बिकता यहाँ,
गैर की रचना पे, अपना नाम वो लिखता यहाँ ।।

(राग रचयिता - विकास शर्मा)

तुझको पुकारूँ मैया जरा आ जाओ,
बिलख रहे बेटे को धीर बँधा जाओ ।। टेर ।।

दूजा नहीं माँ, साथी मेरा,
मुझको सहारा, दाती तेरा,
ममता की प्यारी सी ज्योत जगा जाओ ।। १ ।।

छोड़ दिया मैंने, अब ये जहाँ,
तू ही बता दे माँ, जाऊँ कहाँ,
बच्चों पे थोड़ी सी दया दिखा जाओ ।। २ ।।

नैनों से सावन, बरस रहा,
बेटा तुम्हारा माँ, तरस रहा,
'हर्ष' मेरे माँ पोंछ ले आँसू आ जाओ ।। ३ ।।

(तर्ज : पलकें ही पलकें...)

मैया को अपने घर बुलायेंगे,
सारे मिलकर माँ का लाड लडायेंगे ।। टेर ।।

सोने की झारी में गंगाजल मंगवाया,
मैया के स्वागत में चंदन चौक पुराया,
हाथों से चरणों को धुलायेंगे ।। १ ।।

मैया की प्यारी सी चुनरी है बनवाई,
चाँदी के प्याले में मेंहन्दी है घुलवाई,
माँ के हाथों मेंहन्दी रचायेंगे ।। २ ।।

मैया की नथली में हीरा है जड़वाया,
माथे की बिन्दी को सोने में घड़वाया,
चान्दी की पायलिया पहनायेंगे ।। ३ ।।

फूलों के प्यारे से गजरे है मंगवाये,
'हर्ष' कहे थाली में रोली मोली लाये,
हाथों से माँ को हम सजायेंगे ।। ४ ।।

(राग रचयिता - राजेश चतुर्वेदी)

भगतों ने अर्ज गुजारी, मैया तो है दातारी,
करके माँ सिंह सवारी, पल भर में आन पधारी,
कटरे से चल करके मैया, घर में मेरे आ गई,
हे दयालु शेरांवाली, तू भगतों के मन भा गई ।। टेर ।।

रूप तुम्हारा देख के माता, चन्दा भी शरमाये,
सूरज की किरणों की लाली, जग में तू फैलाये,
तेरे नाम की कैसी मस्ती, हम भगतों पे छा गई ।। १ ।।

तेरे चरणों की धूली से, भाग्य हमारे चमके,
भगतों की किस्मत का तारा, हर पल माता दमके,
दूर हुये हैं आज अंधेरे, ऐसी ज्योति आ गई ।। २ ।।

'हर्ष' हमारी एक तमन्ना, यूँ ही आती रहना,
बेटों का माँ हाथ पकड़ के, राह दिखाती रहना,
ऐसे साथ निभाती रहना, जैसे आज निभा गई ।। ३ ।।

(चुनड़ी)

(तर्ज : अनारदाना...)

लाल चुनरी लाल चुनरी,
प्यारी प्यारी लागे मैया लाल चुनरी ।। टेर ।।

किरणों की लाली इसमें समाई,
ओढ़ के मैया किर्तन में आई,
गुल बनड़ी गुल बनड़ी,
ओढ़ के माँ लागे देखो गुल बनड़ी ।। लाल चुनड़ी... ।। १ ।।

लाल रंग की लालिमा दमके,
हीरे मोती चम चम चमके,
खूब सँवरी खूब सँवरी,
ओढ़ के माँ आज देखो खूब सँवरी ।। लाल चुनड़ी... ।। २ ।।

माँ को ये भाई इसका क्या कहना,
ये तो है मेरी मैया का गहना,
आज निखरी आज निखरी,
ओढ़ के माँ 'हर्ष' देखो आज निखरी ।। लाल चुनड़ी... ।। ३

(तर्ज : फकीरा चल चला...)

दोहा : माँ वैष्णो देवी की चौखट पेऽऽऽ,
जाकर के जो शीश झुकाता हैऽऽऽ ।।
माता रानी की किरपा सेऽऽऽ,
वो मन की मुरादें पाता हैऽऽऽऽ ।।

(जै माता दी ओ बोलो जै माता दी-२,)
ओऽऽऽ चढ़ ऊँचे पहाड़-२ (जै जै अम्बे-३)
अम्बे रानी के दर पे जाके किस्मत सँवार, करले जयकार,
जय भवानी ओ बोलो जय भवानी ।। टेर ।।

अश्विन के नवराते आये, माँ के दर पे जाना है,
अम्बे के दरबार में जाके, सबको शीश झुकाना है,
तेरी बिगड़ी सुधार-२, (जै जै अम्बे-३)
अम्बे रानी के दर पे जाके किस्मत सँवार, करले जयकार,
जय भवानी ओ बोलो जय भवानी ।। १ ।।

(2)

माताजी का ध्यान धरे तू, पौड़ी पौड़ी चढ़ता जा,
मेहराँ वाली की ओ सेवक, जा के तू भी किरपा पा,
माँ को दिल से पुकार-२, (जै जै अम्बे-३)
अम्बे रानी के दर पे जाके किस्मत सँवार, करले जयकार,
जय भवानी ओ बोलो जय भवानी ।। २ ।।

'हर्ष' कहे रे नवरातों में, माँ के भवन जो जाता है,
शेरांवाली की चौखट पे, मन की मुरादें पाता है,
माँ कि महिमा अपार, मिले बच्चों को प्यार, (जै जै अम्बे-३)
अम्बे रानी के दर पे जाके किस्मत सँवार, करले जयकार,
जय भवानी ओ बोलो जय भवानी ।। ३ ।।

धर्म रथ पर बैठ कर लेकर सहारा नाम का,
चल पड़ेगा सन्त बनके कोई पायक श्याम का ।
लोग चाहे कुछ कहे इससे गरज क्या आपको,
बह रही गंगा है इसमें चाहे जितना छाप लो ।।

(राग रचयिता- विकास शर्मा)

चरणों में माँ बैठा हूँ, सुनले क्या मैं कहता हूँ,
मैया दे दे अगर तू सहारा, संवर जायेगा जीवन हमारा ।।

गर तू सुने ना भवानी, किसको सुनाऊँ कहानी,
नैया अटकी है दे दो किनारा,
सँवर जायेगा जीवन हमारा ।। १ ।।

शरण मैं तुम्हारी पड़ा हूँ, चरणों को थामे खड़ा हूँ,
प्यार मिल जाये मुझको तुम्हारा,
सँवर जायेगा जीवन हमारा ।। २ ।।

बनो ना कठोर मेरी मैया, करुणा की दे दे तू छैयां,
'हर्ष' मुझपे करम हो तुम्हारा,
सँवर जायेगा जीवन हमारा ।। ३ ।।

(तर्ज : स्वरचित)

माँ का नाम है मीठा जग में, मनवा मुख से बोल,
नाम बड़ा अनमोल, रे माँ का नाम बड़ा अनमोल ।। टेर ।।

दुखड़े सहके जिसने जन्मा, उसको नहीं भुलाना,
माँ के जैसा दिल ना दूजा, उसको नहीं दुखाना,
माँ की ममता का क्या मोल, मनवा मुख से बोल ।। १ ।।

ममता का सुख लेने खातिर, हरि यहाँ अवतारे,
आँचल की छाया में खेले, बनके माँ के दुलारे,
मन की आँखे बंदे खोल, मनवा मुख से बोल ।। २ ।।

माँ की ममता में ही हमने, रूप प्रभु का पाया,
'हर्ष' कहे माँ तपती धूप में, देती शीतल छाया,
माँ के चरणों में तू डोल, मनवा मुख से बोल ।। ३ ।।

(तर्ज : तुमसे हुआ है प्यार...)

जब से मिला माँ साथ तो, किस्मत सँवर गई,
मेरी अंधेरी जिन्दगी तू, रोशन कर गई ।। टेर ।।

खेता रहा हूँ नाव मैं, पतवार के बिना,
जन्मो जनम का माँ तेरा, अब दास मैं बना,
तेरी दया से अब मेरी हालत सुधर गई ।। १ ।।

खाता रहा हूँ ठोकरें, दर दर की मैं सदा,
हाथों को तूने थामके, चलना सिखा दिया,
तूने दिखाई राह तो मंजिल ही मिल गई ।। २ ।।

खोना कभी ना चाहूँ मैं, माँ साथ ये तेरा,
यूँ ही पकड़ना माँ सदा, ये हाथ तू मेरा,
तेरी महर से 'हर्ष' की बगिया निखर गई ।। ३ ।।

(चुनड़ी)

(तर्ज : मैं मस्त मलंगा हो गया...)

ओ मैया शेरांवाली, तेरी चुनरी तारोंवाली-२,
लाल रंग की लाली दमके, लाली में यूँ खो गया,
मैं आज दिवाना हो गया, मैं आज दिवाना हो गया ।। टेर ।।

लाल सुरंगी चूनरिया माँ मनवा सबका मोहे,
सूरज की किरणों की लाली मुख मण्डल पर सोहे,
पल पल देखूँ तुझको माता, ये क्या मुझको हो गया ।। १ ।।

हीरे मोती ऐसे चमके जैसे चाँद सितारे,
बड़े नसीबों वाली है जो सोहे बदन तिहारे,
एक झलक माँ देखके अपनी, सुधबुध सारी खो गया ।। २ ।।

'हर्ष' कहे माँ चुनरिया पर वारी वारी जाऊँ,
तेरी दया से आज भवानी चुनरी तुझे उढ़ाऊँ,
बरसो पहले का माँ मेरा, सपना पूरा हो गया ।। ३ ।।

(तर्ज : स्वरचित)

दुनिया में कोई, नहीं है किसी का,
माँ का भरोसा सबको, नाम ले इसी का ।। टेर ।।

चार पल की चान्दनी, जीवन में है,
पीछे अंधेरे तेरे, दामन में है,
माँ को बसा ले दिल में-२, जले दीप मन का ।। १ ।।

सदा सुख के साथी, मिलते यहाँ,
माँ का सहारा मिलता, दुख में सदा,
माँ की दया से चलता-२, गुजारा सभी का ।। २ ।।

अगर माँ न होती, तू भी न होता,
माँ से बड़ा न कोई, दूजा है दाता,
'हर्ष' कहे तू माँ बिन-२, होता ना कहीं का ।। ३ ।।

(राग रचयिता- विकास शर्मा)

मेरे घर के आगे तेरा मंदिर हो,
साँझ सेबेरे मैया तेरा दर्शन हो ।। टेर ।।

जब जब होगी तेरी आरती, तब तब दौड़ा आऊँ,
चरणों का अमृत मैं पीके, खुद को धन्य बनाऊँ,
ऐसा मैया अबतो कुछ कर दो ।। १ ।।

शुरु करूँ मैं अपना दिन माँ, तेरा दर्शन पाके,
आनन्द से हर रात बिताऊँ, तेरी महिमा गाके,
ऐसा ही वर अब मुझको माँ दो ।। २ ।।

जब तू मेरे पास में होगी, आना जाना होगा,
'हर्ष' कहे चरणों में तेरे, मेरा ठिकाना होगा,
सपना मेरा माँ अब सच कर दो ।। ३ ।।

(जन्म का भजन)

(तर्ज : देखी मटकी पे मटकी...)

चालो खुशियाँ मनावाँ, झूमा नाचां और गाँवा,
सारी दुनिया में आनन्द छायो रे,
म्हारी मैया को जनम दिन आयो रे ।। टेर ।।

मंगसिर को म्हैनो आयो पावन नौमी आई,
गुरसामल के आंगणिये में देखो खुशियाँ छाई,
ऐसी शुभ घड़ी आई, मैया बाँटे रे बधाई,
छायो हिवड़े में हेत सवायो रे ।। १ ।।

छोटी सी नाराणी झूले पालणिये के माहीं,
होले होले झाला देवे देखो गंगा माई,
हाथां घूँघरा बंधाया, पैरां पायल पहराया,
माथे काजलिये को टीको लगायो रे ।। २ ।।

(2)

झूँझणूँ सूँ आज दादी म्हारे घरां आई,
सगला मिलके दादीजी ने खूब सजाई,
लाल चुनड़ी उढ़ाई, हाथां मेंहन्दी रचाई,
माँ को सोणो सो सिणगार सजायो रे ।। ३ ।।

बुंदिया पेड़ा दादी जी के भोग लगाया,
खीर बणाई और पूड़ा बणवाया,
नागर पान मंगाया, छप्पन भोग सजाया,
दादी रूच रूच भोग लगायो रे ।। ४ ।।

ज्योत जगाई माँ की झाँकी भी सजाई,
रंगोली बणाई बंदनवार बँधाई,
'हर्ष' दादी ने निहारां, माँ की निजरा उतारॉं,
आज भादूड़े को मेलो सो छायो रे ।। ५ ।।

---ooo---

(चुनड़ी)

(तर्ज : तेरे हाथों की लकीर...)

मेरी सुनले जरा रंगरेजा,
मुँह मांगा तुझे दूंगा मैं पैसा,
तू ऐसा सोणा काम करदे,
मेरी मैया जी के मन को जो भाये,
चुनर ऐसी आज रंग दे ।। टेर ।।

बड़े हैं नसीबाँ मेरी मैया घर आई है,
घर मेरे आके मेरा मान बढ़ाई है,
जयपुर से तू पोत मंगाना, लम्पी लूमा लगवाना,
तू ऐसा सोणा काम करदे,
मेरी मैया जी के मन को जो भाये,
चुनर ऐसी आज रंग दे ..... ।। १ ।।

(2)

ओढ़ के चुनरिया माँ खुश हो जायेगी,
अगली दफा माँ बिन बोले घर आयेगी,
बम्बई का लगाना गोटा, कोई माल लगे ना खोटा,
तू ऐसा सोणा काम करदे,
मेरी मैया जी के मन को जो भाये,
चुनर ऐसी आज रंग दे ..... ।। २ ।।

चुनरी तो अमर सुहाग निशानी है,
'हर्ष' मुझे भी माँ को चुनरी उढानी है,
जिसे देख के चन्दा शर्माये, सारे देव खड़े मुस्काये,
तू ऐसा सोणा काम करदे,
मेरी मैया जी के मन को जो भाये,
चुनर ऐसी आज रंग दे ..... ।। ३ ।।

(तर्ज : चौमासो...)

आयो मैया जी को उत्सव, जोर को जी,
कोई नाचे म्हारे मन को, मोरियो जी,
माँ की झाँकी सजास्याँ जीऽऽऽ,
माँ का लाड लडास्याँ जी ।। टेर ।।

सोवे मैया जी के सिरपे, बोरलो जी,
कोई नथली में हीरो, सोवणो जी,
माथे टीको लगास्याँ जीऽऽऽ,
हाथां चुड़लो पहरास्याँ जी ।। १ ।।

राची हाथाँ माही मेहन्दी, राचणी जी,
कोई पैरां में पैजणिया, बाजणी जी,
माँ ने चूनड़ उढ़ास्याँ जीऽऽऽ,
माँ ने गजरों पहरास्याँ जी ।। २ ।।

बैठी होले होले मुल्के, मावड़ी जी,
'हर्ष' मैया जी ने निरखे, टाबरी जी,
माँ ने भजन सुणास्याँ जीऽऽऽ,
माँ को आशीष पास्याँ जी ।। ३ ।।

(मेहन्दी)

(तर्ज : होलिया में उड़े...)

चढ्यो है मेहन्दी को रंग, भवानी थारे हाथाँ में,
रची है लाल सुरंग, भवानी थारे हाथाँ में ।। टेर ।।

सात सुहागण घोल के ल्याई,
दादीजी का हाथ रचाई,
हिवड़े में भरके उमंग, भवानी थारे हाथाँ में ।। १ ।।

ऐसो गहरो रंग चढ़ाई,
ना छूटे इब लाख छुड़ाई,
देख के होवे सारा दंग, भवानी थारे हाथाँ में ।। २ ।।

ज्यूँ मेंहन्दी थारे हाथ समाई,
बैयां म्हारी करल्यों सुणाई,
बेटा ने राखिज्यो थे संग, भवानी थारे हाथाँ में ।। ३ ।।

भाव भरी मेंहन्दी माँ ल्यावाँ,
'हर्ष' कहवे म्हें यूँ ही रचावाँ,
उठे है मन में तरंग, भवानी थारे हाथाँ में ।। ४ ।।

मंगल पाठ का भजन

(तर्ज : कलियों का चमन...)

दादी का मंगल जहाँ होता है-२,
माँ की किरपा होती है, धन की बरखा होती है,
सारे संकट टलते हैं, सारे दुखड़े मिटते है ।। टेर ।।

मंगल पाठ करो सब मिलके, महिमा है बड़ी भारी,
झुझणु वाली दादी का ये, पाठ है मंगल कारी,
भगतों का मंगल होता है ।। १ ।।

मंगल पाठ जहाँ पर होता, दादी पल में आती,
श्रद्धा रखने वालों को माँ, आशिष देकर जाती,
मैया का दर्शन होता है ।। २ ।।

मंगल पाठ करेगा जो तू, रोज नियम से प्यारे,
'हर्ष' कहे माँ कि किरपा से, होंगे वारे न्यारे,
मनवा ये पुल्कित होता है ।। ३ ।।

(सिन्धारा)

(तर्ज : इक परदेशी मेरा...)

दादीजी का लाड मिलके, सारा करस्याँ,
मैयाजी का चालो जी, सिन्धारा करस्याँ ।। टेर ।।

झुझणूँ वाली दादी थाने, घर में बुलावाँगा,
राचणी या मेंहन्दी थारे, हाथाँ में मँडावाँगा,
लाल लाल हाथ दादी, थारा करस्याँ ।। १ ।।

आंगणिये में म्हारे दादी, झूलो म्हें घलावाँगा,
होले होले झाला देकर, थाने म्हें झुलावाँगा,
दादी थारा चाव घणा, न्यारा करस्याँ ।। २ ।।

बुंदिया भुजिया दादी थारे, भोग म्हें लगावाँगा,
चौकी पर बिठाकर थाने, हाथां सूं जिमावाँगा,
'हर्ष' थाँपे लूण राई, वारा करस्याँ ।। ३ ।।

(तर्ज : प्रेम कहानी में...)

झूंझण वाली माँ, तू जग सेठाणी है, अम्बे कल्याणी है,
सारी दुनियाँ कहती है, सतियों की रानी है ।। टेर ।।

बनके नारायणी, कलयुग में आई,
दुनिया ने देखी माँ तेरी सकलाई,
भगतों की रक्षक है, अम्बे महारानी है, तेरी अजब कहानी है,
सारी दुनिया कहती है, सतियों की रानी है ।। १ ।।

झूँझणूँ विराजे माँ, ज्योत है सवाई,
भगतों की करती हो, पल में सुनाई,
सारी दुनिया मैया, तेरी दिवानी है, तुझसा ना दानी है,
सारी दुनिया कहती है, सतियों की रानी है ।। २ ।।

दुनिया के सेठ तेरी, चौखट पे आते,
'हर्ष' कहे रे सारे, तेरा दिया खाते,
हमको भी हे दादी, तेरी किरपा पानी है, किस्मत खुलवानी है,
सारी दुनिया कहती है, सतियों की रानी है ।। ३ ।।

(तर्ज : अमृत है बाबा का नाम...)

चालो दादी जी के धाम, भगतों दौड़ दौड़ के,
भगतो दौड़ दौड़ के, भगतो दौड़ दौड़ के ।। टेर ।।

दादी जी को मेलो आयो,
मन में आनन्द भोत समायो,
इब तो हो जाओ थे त्यार, धन्धों छोड़ छोड़ के ।। १ ।।

माँ के मेहन्दी माण्डण चालो,
माँ की चुनड़ी भी ले चालो,
दादी सेठाणी सी लागे, चुनड़ी ओढ़ ओढ़ के ।। २ ।।

चौदस सगला रात जगाओ,
मावस चरणां धोक लगाओ,
देहली चिटकी जाय चढ़ाओ, नारियल फोड़ फोड़ के ।। ३ ।।

ढोलक ढफली 'हर्ष' बजाओ,
झूमो नाचो मौज मनाओ,
मीठा मीठा भजन सुणाओ, भगतों जोड़-जोड़ के ।। ४ ।।

(सिन्धारा)

(तर्ज : कामण...)

चालो जी भगतों मिलके, माँ का लाड लडास्याँ राज,
तीजाँ का सिन्धारा माँ का, आँपा आज करास्याँ राज ।।

घणे मान सूँ आँगणिये में, दादी आप पधास्या राज,
सात सुहागण मिलके करसी, मैया का सिन्धारा राज ।। १ ।।

रोली, मोली, गजरा ल्याई, मेंहन्दी माण्डण आई राज,
ताराँ जड़ी लाल चुनड़ी, सागे चुड़लो ल्याई राज ।। २ ।।

चंदन चौक पुराया आँपा, मैया ने सजास्याँ राज,
गंगाजल सूँ चरण पखाराँ, रोली तिलक लगास्याँ राज ।। ३ ।।

बुंदिया भुजिया खीर चूरमो, कंचन थाल सजाया राज,
छप्पन भोग छत्तीसों मेवा, माँ के भोग लगाया राज ।। ४ ।।

चान्दी चौकी बैठ भवानी, होले होले मुल्के राज,
घणे चाव सूं 'हर्ष' टाबरी, दादी जी ने निरखे राज ।। ५ ।।

(मेहन्दी)

(तर्ज : सेठों की क्या करे नौकरी...)

मेहन्दी ले माँ टाबर आयो, माण्डण तेरा हाथ रे,
लाज राखले टाबरिये की, आज राखले बात रे ।। टेर ।।

घणे चाव सूँ आज मैं ल्यायो, मेंहन्दी माँ घुलवाय के,
बड़े जतन सूँ हाथ रचावूँ, पीढे पर बिठाय के,
सावण भादौ सी बरसे ली, आँख्या सूँ बरसात रे ।। १ ।।

लाल चूनड़ी चूड़ो चुड़लो, रोली मोली लाल रे,
हरे रंग की मेंहन्दी होसी, सूख्याँ पाछे लाल रे,
एकर हाथ मण्डा कर मन्ने, दे दे या सौगात रे ।। २ ।।

मेहन्दी को ले नाम यो टाबर, आयो रीत निभावण ने,
'हर्ष' भवानी बेटो आयो, माँ सूं प्रीत बढ़ावण ने,
तेरे नाम की फेरुंगा माँ, माला मैं दिन रात रे ।। ३ ।।

(तर्ज : म्हारा लीले रा असवार...)

थारी चूनड़ चम्मकदार लेकर आयो थारे द्वार, दादी
ओढ़ के बैठो जी, भवानी थे तो, ओढ़ के बैठो जी ।। टेर ।।

लाल सुरंगी चूनड़ी माँ टाबरियो है ल्यायो,
आज भवानी ओढल्यो थे मेरो मान बढ़ाओ,
थाँसू घणी करुँ मनवार, करदयो किरपा लखदातार, दादी,
ओढ़ के बैठो जी, भवानी थे तो, ओढ़ के बैठो जी ।। १ ।।

झिल मिल झिल मिल चून्दड़ी ने मैया थे स्वीकारो,
पलक उघाड़ो मावड़ी थे मेरी ओर निहारो,
दीन्ही थाँसू अरज गुजार, निरखो चूनड़ ने इकबार,दादी,
ओढ के बैठो जी, भवानी थे तो, ओढ़ के बैठो जी।। २ ।।

'हर्ष' पुकारे मावड़ी थे बेगा बेगा आओ,
टाबरिये सूँ प्रीत निभाके मेरी आस पुराओ,
थारो साँचों है दरबार, मेरी अरजी बारम्बार, दादी,
ओढ के बैठो जी, भवानी थे तो, ओढ़ के बैठो जी ।। ३ ।।

(तर्ज : सारे जग से साँवरा...)

देता है तू राम का, कदम कदम पर साथ-२,
संकट मोचन संकट हरले, थामले मेरा हाथ ।। टेर ।।

राम का तू दास है, मैं दास तेरा हूँ,
आ मुझे तू थामले, दुखड़ो का मारा हूँ,
बाबा गर तू ना सुने, कौन सुनेगा बात ।। १ ।।

रामजी के तू सदा, दुखड़े मिटाता है,
बाट जोऊँ मैं तेरी, तू क्यूँ न आता है,
आजा अब तू देखले, मेरे भी हालात ।। २ ।।

'हर्ष' की भूलों को बाबा, माफ तू करना,
दास तेरा जानके, दिल साफ तू करना,
ना जाने कितने दिये, दुनिया ने आघात ।। ३ ।।

(तर्ज : नफरत की दुनिया....)

संकट ने घेरा है आज, तेरा राम पुकारे रेऽऽऽ,
आजा मेरे हनुमान,
भाई की मुर्छा को तोड़ के, प्राण बचाले रेऽऽऽ,
आजा मेरे हनुमान ।। टेर ।।

पापी ने धोखे से, शक्ति को दे मारा,
मुर्छित पड़ा देखो, कैसे ये बेचारा,
मेरी लाज तू आकर बचा, तेरा राम पुकारे रेऽऽऽ ।। आजा मेरे ...

माता को जाकर के, मैं क्या बताऊँगा,
दुनियाँ को अब कैसे, मुखड़ा दिखाऊँगा,
तुझे आँख में आँसू लिये, तेरा राम पुकारे रेऽऽऽ ।। आजा मेरे ...

सूरज के उगने से, पहले चले आना,
वरना मुझे भी तू, जिन्दा नहीं पाना,
भाई का गम कैसे सहूँ, तेरा राम पुकारे रेऽऽऽ ।। आजा मेरे ...

तेरे राम को जब भी, दुखड़ो ने घेरा है,
आकर के तूने ही, गम से उबारा है,
अब 'हर्ष' क्यूँ देरी करे, तेरा राम पुकारे रेऽऽऽ ।। आजा मेरे

(तर्ज : सासु लड़ मत...)

ढोला मेलो देखण जास्यूँ म्हारो जियो तरसे-२ ।। टेर ।।

ढोला सालासर मैं जास्यूँ, जाके चरणाँ धोक लगास्युँ-२,
म्हारो बालाजी के दरसण तांई हियो भटके ।। १ ।।

ढोला लाल ध्वजा ले जास्यूँ, जाके मंदिर शिखर चढ़ास्युं-२,
छत्तर चान्दी को चढ़ास्यूँ मैं तो जाके दर पे ।। २ ।।

ढोला चूरमो बणवास्यूँ, जाके सवामणी करवास्युँ-२,
इब तो बेगो टिकट कटादे म्हारी आँख फड़के ।। ३ ।।

ढोला जोगण बणके जास्यूँ, जाके मीठा भजन सुणास्युँ-२,
मतना 'हर्ष' ने सतावे म्हारा नैण बरसे ।। ४ ।।

(तर्ज : पीलो...)

लाल लंगोटो थारे, हाथां में घोटो जी-२ थे,
दुष्टां ने मार भगावो म्हारा बाला जी,
अंजनी का लाला जी ।। टेर ।।

कानाँ में कुण्डल सोहे, पैरां में पायल जी-२, थे,
छम छम नाच दिखाओ म्हारा बालाजी,
अंजनी का लाला जी... ।। १ ।।

सिन्दूरी चोलो बाबा, तन थारे सोवे जी-२, थे,
भगतां रा काम बणाओ म्हारा बालाजी,
अंजनी का लाला जी ।। २ ।।

लाल ध्वजा तो थारे, मंदिर फरूखे जी-२, थे,
भगतां ने दुःखड़ा सूं उबारो म्हारा बालाजी,
अंजनी का लाला जी... ।। ३ ।।

भगतां री लागी थारै, भीड़ घणेरी जी-२, थे,
'हर्ष' ने दरपे बुलाओ म्हारा बालाजी,
अंजनी का लाला जी... ।। ४ ।।

(तर्ज : भोलानाथ अमली...)

माता अंजनी को लाल, माता अंजनी को लाल,
भगतां को है रखवालो यो, दुष्टां को है काल ।। टेर ।।

मेंहन्दी पुर ने धाम बणायो बालाजी सरकार,
भगतां का यो भूत भगावे पल में घोटो मार,
माता अंजनी... ।। १ ।।

सालासर में बण्यो देवरो महिमा अपरम्पार,
भगतां का यो काम बणावे बाबो लखदातार,
माता अंजनी... ।। २ ।।

पुनरासर के बालाजी की करियो जय जयकार,
पल में बाबो भर देवे जी भगतां को भण्डार,
माता अंजनी... ।। ३ ।।

दो जाँटी में आप विराजे शंकर को अवतार,
थे भी जाके शीश झुकाओ 'हर्ष' करे मनवार,
माता अंजनी... ।। 4 ।।

(तर्ज : कामण)

चालो जी सगला मिलके, अंजनी माँ के जास्याँ राज,
बाला जी अवतार लियो है, सगला निरखण जास्याँ आज ।।

निजराँ उताराँ चालो, लूण राई वाँरा राज,
लूण राई वाराँ सगला, मिलके निजर उताराँ आज ।। १ ।।

छोटो सो लाल मैया को, पालणिये में सुत्यो राज,
शिव शंकर के अवतारी ने, झाला देर झुलास्याँ आज ।। २ ।।

छोटो सो लाल लंगोटो, बजरंगी के बान्ध्यो राज,
राम की महिमा गावणियें की, आपाँ महिमा गास्याँ आज ।। ३ ।।

छोटे छोटे पगल्या माहीं, घूँघरिया बंधाया राज,
माँ अंजनी के लाड कुँवर का, आपां लाड लडास्याँ आज ।। ४ ।।

छोटे छोटे हाथाँ माही, बाजुबन्ध पहराया राज,
'हर्ष' कहवे बाबा की किरपा, सगला मिलके पास्यां आज ।। ५ ।।

(तर्ज : गणेश के पापा...)

लीन्हो अंजनी माँ के-२, आँगणिये अवतार बालाजी,
बधाई लेण चालो,
लाग्यो दरसण तांईं-२, भगतां को अंबार बालाजी,
बधाई लेण चालो... ।। टेर ।।

छोटा छोटा पगल्याँ माही, घूँघरा पिहराया,
हाथां माही बाजूबन्ध, चाँदी का बँधाया,
कोई लाल लंगोटो-२, बान्ध के सुत्या आज बालाजी,
बधाई लेण चालो... ।। १ ।।

होले होले अंजनी माता, डोर ने हिलावे,
बालाजी ने झाला देकर, पालणे झुलावे,
मैया लेवे जी-२, बलइयाँ बारम्बार बाला की,
बधाई लेण चालो... ।। २ ।।

'हर्ष' माँ के आँगणे में, खुशियाँ है छाई,
बालाजी ने निरखण आया, लोग लुगाई,
चालो आपां लेवां-२, मिलके निजर उतार बाला की,
बधाई लेण चालो... ।। ३ ।।

(तर्ज : कान में झुमका...)

राम का हर पल ध्यान लगाये,
राम नाम मतवाला,
चीर के सीना दर्श कराये,
माँ अंजनी का लाला, ओ बाबा,
राम का दिवाना सिया राम का दिवाना-२ ।। टेर ।।

अंग सिन्दूर विराजे है, राम मगन हो नाचे है,
राम के सिवा तो इसे, कुछ भी न भाये रे,
महिमा राम की गाते हैं, छम छम नाच दिखाते हैं,
राम के बिना ये माला, तोड़ बिखराये रे,
राम को दिल में बसाके, मुस्काके,
गुण गाके देखो, राम को रिझाये,
हनुमान सा दूजा ना है रघुवर का रखवाला ।।
चीर के सीना दर्श कराये ... ।। १ ।।

(2)

रघुनन्दन का प्यारा है, सीता का दुलारा है,
रामजी का मेरा बाबा, साथ निभाये रे,
राम की सेवा करता है, राम की पूजा करता है,
रामजी के द्वारे बैठा, चुटकी बजाये रे,
राम का ये है दिवाना, मस्ताना,
हनुमाना देखो, राम धुन गाये,
जब जब राम पे विपदा आई, इसने संकट टाला ।।
चीर के सीना दर्श कराये ... ।। २ ।।

राम भजन जहाँ होता है, वहाँ पे हाजिर रहता है,
राम के भजन में ये, सुध बिसराये रे,
जिस घर राम बसेरा है, हनुमत का वहाँ पहरा है,
'हर्ष' कभी ना वहाँ, विपदा सताये रे,
राम का नाम सुहाये, मन भाये,
दिल लुभाये देखो, हरि गुण गाये,
आँख मींच कर ध्यान लगाये फेरे राम की माला ।।
चीर के सीना दर्श कराये ... ।। ३ ।।

(तर्ज : क्या खूब लगती हो...)

रावण तेरी नगरी में, इक बानर आया है-२,
चुन चुन के दुष्टों को, मार गिराया है,
सोने की लंका को पल में राख बनाया है ।। टेर ।।

ये वन अशोक में आया, हाँ आया,
माँ सीता का इसने पता लगाया,
तरूवर को जड़ से उखाड़ा, हाँ उखाड़ा,
तेरे अक्षय को, पल में पटक पछाड़ा ।। चुन चुन के... ।। १ ।।

दुष्टों में मची रे भगदड़, हाँ भगदड़,
इक बानर ने ऐसी मचाई गड़बड़,
तूने मेघनाद को भेजा, हाँ भेजा,
बजरंगी को, ब्रह्मपाश में बान्धा ।। चुन चुन के... ।। २ ।।

तूने जान के इसको बंदर, हाँ बंदर,
लिपटा डाली रूई पूँछ के उपर,
इक दूत की करी हँसाई, हाँ हँसाई,
क्यूँ 'हर्ष' भला, पूँछ में आग लगाई ।। चुन चुन के... ।। ३ ।।

(हनुमान चालीसा की महिमा)

(तर्ज : मिलो ना तुम तो हम घबराये...)

दुःख में बंदे ना घबराना, ना कर ऐसा वैसा,
पढ़ो हनुमान चालीसा-२,
जग में तेरा नाम बढेगा, काम चलेगा ऐसा,
पढ़ो हनुमान चालीसा-२ ।।

गणपत-गुरु को ध्याले, राम मनाले उसके बाद मेंऽऽऽ,
बल-बुद्धि-विद्या पाओ, हनुमत के गुणगान सेऽऽऽ,
संकट में तु ना घबराना, मिल जायेगा रस्ता,
पढ़ो हनुमान चालीसा-२ ।। १ ।।

हनुमत की महिमा गाओ, खुश हो जायेगी माँ जानकीऽऽऽ,
सीता जो खुश हो जाये, किरपा करेगें फिर रामजीऽऽऽ,
चरणों का तू ध्यान लगा, क्यूँ मारा मारा फिरता,
पढ़ो हनुमान चालीसा-२ ।। २ ।।

फिकर तुझे फिर कैसी, रावण सरीखे हैवान कीऽऽऽ,
'हर्ष' मिलेगी तुझको, किरपा दयालु हनुमान कीऽऽऽ,
हनुमत की किरपा से प्यारे, यम का फन्दा कटता,
पढ़ो हनुमान चालीसा-२ ।। ३ ।।

(तर्ज : चैन मेरा लूट लिया...)

मस्तियाँ छाई रे, अवध की गलियों में-२ ।। टेर ।।

चौदह बरस बीते राम जी पधारे,
भाई भरत के हुये वारे न्यारे -२,
सिया मुस्काई रे, अवध की गलियों में ।। १ ।।

माता कौशल्या देखो बाँटे मिठाई,
खुशियों से नाचे है लोग लुगाई-२,
बँटे है बधाई रे, अवध की गलियों में ।। २ ।।

सारे अवध में मची कैसी होली,
रंग उड़ाये है मस्तों की टोली-२,
बजे शहनाई रे, अवध की गलियों में ।। ३ ।।

राम मगन होके बजरंगी नाचे,
'हर्ष' दिवाना सारी सुध बिसरा के-२,
झूमे रघुराई रे, अवध की गलियों में ।। ४ ।।

(तर्ज : कर चले हम फिदा...)

मेटने राम की खलबली जागिये,
जागिये वीर बजरंग बली जागिये ।। टेर ।।

तुझको बचपन में ऋषियों ने श्राप दिया,
भूल जाओगे तुम अपना बल ऐ बली,
याद कोई दिलाये जो आकर तुझे,
जान पाओगे शक्ति को अपनी तभी,
दूजा ना, आपसा, हे बली जागिये, जागिये वीर... ।। १ ।।

बल और बुद्धि में कोई ना सानी तेरा,
अपनी चुप्पी को बजरंगी तोड़ो जरा,
राम खातिर ही तुमने तो जन्म लिया,
राम सेवा से मुखड़ा ना मोड़ो जरा,
करने को, राम जी, की भली जागिये, जागिये वीर... ।। २ ।।

कपटी रावण ने छल करके सीता हरी,
पापी के आगे माता की इक ना चली,
कौन सा काज जो तुम ना करने सको,
'हर्ष' माता की सुधि लेके आओ बली,
तोड़ने, दानवों, की नली जागिये, जागिये वीर...।। ३ ।।

(तर्ज : हरियाणवी...)

इक मुक्के से धूल चटाद्यूँ, अकड़ के इतणा मना फिरे,
श्री राम के हाथां मरेगा रावण, छोड़ दिया तने परे-परे ।।

सीता की सुध लेणे खातिर, राम दूत बण मैं आया,
मेघनाथ के बाँधेगा मैं, मरजी तै बन्ध कर आया,
टेम जाणिये इक दिन रावण, घड़ा पाप का भरे-भरे,
श्री राम के हाथां मरेगा रावण... ।। १ ।।

गाजर मूली समझ के तेरी, सारी सेना पीस सकूँ,
बन्दर मतना समझ रे रावण, प्राण तेरे मैं खींच सकूँ
हाथ बन्धे सै मेरे मन्ने, काम राम के कर्याँ सरे,
श्री राम के हाथां मरेगा रावण... ।। २ ।।

झूठा भरम पाल मत बैरी, काल खड्या तेरे आगे,
तेरे कुल की खैर मनाले, सीता भेज मेरे सागे,
साँची बोलूँ बात मानले, क्यूँ मनमानी करे-करे,
श्री राम के हाथां मरेगा रावण... ।। ३ ।।

पैर पकड़ले राम के जाके, खैर वंश की जो चावे,
राम के आगे टिक ना पावे, क्यूँ इतना तू भरमावे,
'हर्ष' राम का नाम लिख्यां तैं, पत्थर जल में तिरे-तिरे,
श्री राम के हाथां मरेगा रावण... ।। ४ ।।

(तर्ज : चाँदी की दीवार...)

तीन लोक में बजरंगी सा, दूजा ना बलवान कोई,
हुआ न पहले, कभी न होगा, तुझ सा भक्त महान कोई ।।

बाल समय में उगता सूरज, तूने ग्रास बना डाला,
सोने की लंका नगरी को, तूने राख बना डाला,
अहिरावण की बाँह उखाड़ी, पल में धूल चटा डाला,
चौदह भुवन में दूजा ना है, तुझसा वीर महान कोई ।। १ ।।

संजीवन बूँटी लाकर के, लक्ष्मण प्राण बचाये तुम,
प्रमदा वन में जाकर के, माता का पता लगाये तुम,
भक्त विभीषण को ला करके, राम प्रभु से मिलाये तुम,
भक्ति और शक्ति के दाता, तुझसा ना गुणवान कोई ।। २ ।।

राम नाम बिन मोती माला, तोड़ तोड़ बिखराये थे,
दुनिया को विश्वास दिलाने, सीना चीर दिखाये थे,
गद्‌गद् हो श्री राम प्रभु जी, तुझको कंठ लगाये थे,
'हर्ष' तुम्हारे श्री चरणों में, झुकता सकल जहान कोई ।। ३ ।।

(तर्ज : घूमर एवं पल्लो लटके...)

म्हाने बेगा सा दर पे बुलाल्यो हनुमान-२,
दरसण करबा म्हें आस्याँ ।। टेर ।।

घणा दिनां सूँ चाव लागर्‌यो, थारे दर पे जावाँ,
बाला जी के चरणाँ माहीं, जाके धोक लगावाँ,
ओ म्हाने बेगा सा हुकम सुणादयो हनुमान ।। १ ।।

दिन दिन बीत्या जावे बाबा, तरसे थारो दास,
टाबरिये की बाला जी थे, आज पुराओ आस,
ओ म्हाने चरणाँ को चाकरियो बणाल्यो हनुमान ।। २ ।।

कइयाँ देर लगाई बाबा, कइयाँ करी उवाँर,
भूल चूक की माफी देद्‌यो, सुण लीज्यो पुकार,
ओ म्हारी भूल्याँ थे दिल सूँ भुलाद्‌यो हनुमान ।। ३ ।।

'हर्ष' करे अरदास बाला साँ, राखो म्हारो मान,
एक भरोसो थारो ही है, पंचमुखी हनुमान,
ओ म्हारे हिवड़े ने थे हर्षाद्‌यो हनुमान ।। ४ ।।

(तर्ज : ये माना मेरी जाँ...)

भगतों के दुखड़े, ये पल में मिटाये,
मुश्किल को आसां, बजरंग बनाये,
अगर इनकी थोड़ी, किरपा हो जाये,
नहीं कोई विपदा, तुझको सताये ।। टेर ।।

महर की निगाहें, जहाँ इसने डाली,
वहाँ झिल मिलाई है, किरणों की लाली-२,
अगर अपनी बाहें, तू इनको थमाये, नहीं कोई विपदा... ।। १ ।।

पलकें उठाकर, जब जिसको देखा,
पल में बदल दी, किस्मत की रेखा-२,
अगर इनको बन्दे, जरा तू रिझाये, नहीं कोई विपदा... ।। २ ।।

इसे जिसने चाहा, बना ये उसी का,
तभी 'हर्ष' उसको, डर ना किसी का-२,
अगर साथ तेरा, ये बाबा निभाये, नहीं कोई विपदा... ।। ३ ।।

(तर्ज : कौन दिशा में ....)

धूम मची है, आया बालाजी का उत्सव-२,
झूमे सारा संसार, देखो नर और नार,
सारे नाच रहे, नाच रहे,
खूब सजा है माता, अंजनी का अंगना,
बाबा लिये अवतार, छाई खुशियाँ अपार,
सारे नाच रहे, नाच रहे ।। टेर ।।

चैत सूदी पूनम दिन आया, झूम रहा संसार होऽऽऽ,
माँ अंजनी के घर आंगन में, गूँज रही किलकार होऽऽऽ,
गोद लिये माँ लाल को अपने-२, निरखे बारम्बार होऽऽऽ,
होले होले कपि को झुलावे मैया पलना-२ ।। १ ।।

डम डम ढोल नगाड़े बाजे, घर घर बाजे थाल होऽऽऽ,
चान्दी के पलने में झूले, माँ अंजनी का लाल होऽऽऽ,
राम प्रभु का सेवक प्यारा-२, दुष्टों का ये काल होऽऽऽ,
आज खिली है माता अंजनी की बगिया-२ ।। २ ।।

भगतों का है रखवाला ये, राम का सेवक खास होऽऽऽ,
शरणागत को मेरा बाबा, करता नहीं निराश होऽऽऽ,
हाथ दया का रखना बाबा-२, ''हर्ष'' करे अरदास होऽऽऽ,
आज लगा है देखो भगतो का मेला-२ ।। ३ ।।

(तर्ज : पार करो मेरा बेड़ा भवानी...)

आई जनम की बेला रे देखो, आई जनम की बेला,
लागा है भगतों का मेला रे देखो, आई जनम की बेला ।। टेर ।।

चैत सुदी पूनम है आई, घर घर में खुशियाँ है छाई,
अंजनी के घर थाल बजे है, धरती अम्बर झूम उठे है,
उमड़ा है भक्तों का रेला रे देखो, आई जनम की बेला ।। १ ।।

दर्शन को आये नर-नारी, शीश झुकाये बारी बारी,
मिल करके जयकार लगाये, मस्ती में नाचेऔर गाये,
लाखों पे भारी अकेला रे देखो, आई जनम की बेला।। २ ।।

भगतों का रखवाला आया, राम नाम मतवाला आया,
'हर्ष' कहे सीता का दुलारा, राम प्रभु की आँखों का तारा,
वीर बड़ा अलबेला रे देखो, आई जनम की बेला ।। ३ ।।

(तर्ज : तेरे हाथों की लकीर...)

तुझे माने है भरत सम भाई, करे तुझपे भरोसा रघुराई,
तेरा ही एतबार करते,
सीना चीर के तू जग को दिखाये, सीने में सियाराम बसते ।।

राम का पुजारी है ये, राम का दिवाना है,
राम की शरण में, इसका ठिकाना है,
कोई तुझसा नहीं बलशाली,
श्री राम की करे रखवाली ।। तेरा ही ऐतबार... ।। १ ।।

राम के बिना तो इसे, कुछ भी न भाता है,
राम नहीं पाये माला, तोड़ बिखराता है,
माँ सीता जी की आँख का तारा,
श्री राम जी का तू ही है सहारा ।। तेरा ही ऐतबार... ।। २ ।।

राम जी की विपदा को, पल में मिटाता है,
कर न सके जो कोई, करके दिखाता है,
कहे 'हर्ष' न तेरा कोई सानी,
सारे जग में न दूजा बलवानी ।। तेरा ही ऐतबार... ।। ३ ।।

(तर्ज : माई ऐ थारी ज्योत सवाई ए...)

श्याम सरकार पधारो जी-२,
थारे टाबरियां पर महर करो, दातार पधारो जी ।। टेर ।।

जगमग दमके ज्योत साँवरा, ''फूलां रो सिणगार'' -२, श्याम थारो,
अन्तर केशर महक रह्या है, खूब सज्यो दरबार,
आके इक बार निहारो जी ।। १ ।।

ऊँचे आसण आन विराजो, ''खाटू रा सरदार-२'', श्याम जी,
खीर चूरमो करो कलेवो, भक्त करे मनवार,
आके भगतां ने तारो जी ।। २ ।।

'हर्ष' उडिके बाट श्यामजी, ''मतना करो उंवार-२'', श्याम जी,
घणे मान सूँ थाने बुलावां, लीले रा असवार,
आके भव पार उतारो जी ।। ३ ।।

(तर्ज : जरा सामने तो आओ छलिये...)

खाटूवाले तू लखदातार है, लिया कलयुग में तूने अवतार है,
तेरी महिमा बड़ी है दयालू, तेरा रूतबा बड़ा ही अपार है ।।

श्री कृष्ण को शीश दान दे, दानी बड़ा कहलाया है,
निर्बल की तूने लाज बचाई, हारे का साथ निभाया है,
श्याम किरपा का तू भण्डार है, तेरे भगतों का तूही आधार है,
तेरी महिमा बड़ी है दयालू, तेरा रूतबा बड़ा ही अपार है ।। १ ।।

बिन माँगे तू निज भगतों के, आकर के भण्डार भरे,
संकट की घड़ियों में बाबा, तू ही सारे कष्ट हरे,
आये दीनों की सुनके पुकार है, लेता दुखड़ों से पलमें उबार है,
तेरी महिमा बड़ी है दयालू, तेरा रूतबा बड़ा ही अपार है ।। २ ।।

लीले वाले श्याम तुम्हारी, दया का कोई छोर नहीं,
'हर्ष' कहे जो तू कर देता, कर सकता ना ओर कोई,
तेरे चरणों में झुके संसार है, तेरी लीला तो अपरम्पार है,
तेरी महिमा बड़ी है दयालू, तेरा रूतबा बड़ा ही अपार है ।। ३ ।।

(तर्ज : रघुपति राघव राजाराम...)

आन बसो मन में घनश्याम, मन बन जाये तेरा धाम,
मन बन जाये तेरा धाम, राधा के संग आओ श्याम ।। टेर ।।

आन बजाओ मधुर मुरलिया, वश में करलो तनमन छलिया,
होठ जपे बस तेरा नाम, मन बन जाये तेरा धाम ।। १ ।।

पलकों का पलना बन जाये, राधा के संग श्याम झुलाये,
जीभ करे तेरा गुणगान, मन बन जाये तेरा धाम ।। २ ।।

हृदय ये मधुवन बन जाये, जिसमें कान्हा रास रचाये,
नैन धरे तेरा ही ध्यान, मन बन जाये तेरा धाम ।। ३ ।।

साँस साँस हो तेरा वंदन, नस नस वास करे नंद नंदन,
'हर्ष' निहारे आठों याम, मन बन जाये तेरा धाम ।। ४ ।।

(तर्ज : दिल लगा लिया...)

दिल लुभा लिया, तेरा ''सिंगार साँवरे''-३,
क्यूँ बना दिया, हमें ''बेकरार साँवरे''-३ ।। टेर ।।

चन्दन का टीका सोहे, घुँघराले बाल है,
तिरछी अदायें तेरी, टेढ़ी मेढ़ी चाल है,
गल बैजन्ती सोहे, तनपे पिताम्बर,
भगतों का मनवा मोहे, आज ऐसे सजकर,
हमने पा लिया, तेरा ''दीदार साँवरे''-३ ।। १ ।।

मोटी मोटी अँखियों में, कजरे की धार है,
कानों में कुण्डल तेरे, पुष्पों का हार है,
जुलम करे है कान्हा, ऐसे तेरा ताकना,
प्रीत की डोर से यूँ, हमें ऐसे बाँधना,
हमपे छा गया, तेरा ये ''खुमार साँवरे''-३ ।। २ ।।

साँवला सा मुखड़ा है, मीठी मुस्कान है,
ऊँचा सिंहासन तेरा, ऊँची तेरी शान है,
मोर मुकुट सोहे, अधरों पे मुरली,
'हर्ष' हमारी नीन्दे, कान्हा तूने हरली,
सुरूर छा गया, हमपे ''बेशुमार साँवरे''-३ ।। ३ ।।

(तर्ज : ये तो प्रेम की बात है उधो...)

कोई पूछे तो उसको बतायें, कहाँ रमता मिलेगा कन्हैया,
जहाँ होते हैं सन्त समागम, वहाँ बसता मिलेगा कन्हैया ।।

चाहे मथुरा में जाकर के ढूँढ़ो, 'या गोकुल में जाकर बुलाओ'-२,
जाके कुंज गलिन में पुकारो, रास रचता मिलेगा कन्हैया ।। १ ।।

चाहे पनघट पे जाके निहारो, 'इसे जमुना के तट पे पुकारो'-२,
वहाँ चुपके से गुजरी से देखो, छेड़ करता मिलेगा कन्हैया ।। २ ।।

चाहे पढ़ लेना सारी रामायण,'ज्ञान भगवत का हृदय में भरलो'-२,
तुझे गीता जी के पन्नों में प्यारे, प्रेम करता मिलेगा कन्हैया ।। ३ ।।

चाहे ग्वालों की टोली में ढूँढ़ो,'या गुजरियों से जाकर के पूछो'-२,
'हर्ष' राधे जी का हृदय टटोलो, वहाँ हँसता मिलेगा कन्हैया ।। ४ ।।

(तर्ज : कौन दिशा में लेके...)

होली खेलो राधे रानी, बोले रे साँवरिया-२,
जरा खुद को सम्भाल, तोहे कर दूंगा लाल,
गोरी फागुन में, फागुन में,
ऐसे ना सताओ कान्हा, बोले रे गुजरिया-२,
देखो हँसे ग्वाल बाल, मेरा हुआ बुरा हाल,
पिया फागुन में, फागुन में ।। टेर ।।

फागुन आया, आज बिरज में, उड़ रहा रंग गुलाल हो,
गूजरियो संग राधा रानी, ग्वालों संग नन्दलाल हो,
वृन्दावन की कुंज गलिन में-२, मच गई आज धमाल हो,
भर पिचकारी मारे भीगे रे चुनरिया-२,
जरा खुद को सम्भाल ।। १ ।।

(2)

धीरे धीरे बजे बाँसुरिया, थिरकन लागे अंग हो,
छम छम नाचे, राधे रानी, रंग गई श्याम के रंग हो,
होली का तो एक बहाना-२, करना है मुझको तंग हो,
बैरन बाँसुरिया ने किया रे बावरिया-२,
जरा खुद को सम्भाल ।। २ ।।

सोये अरमां, जाग उठे रे, जब जब फगवा आये हो,
प्रीत हिलोरे, मारे दिल में, तेरी याद सताये हो,
'हर्ष' कहे ओ राधे तुम बिन-२, श्याम तो रह ना पाये हो,
श्याम बिना तो तू भी आधी रे गुजरिया-२,
जरा खुद को सम्भाल ।। ३ ।।

सुनता हूँ सतायों के दुख दर्द मिटाते हो ।
दो बूँद दया की जरा इस दास पे बरसाना ।।

(तर्ज : मुझे मिला रंगीला यार...)

मोपे चढ़ा श्याम का रंग उतारे उतरे ना-२ ।। टेर ।।

श्याम की बनी रे मैं तो, जोगनिया,
दिल देके जाने कैसा, रोग लिया-२,
मेरा बदल गया है ढंग, सुधारे सुधरे ना ।। १ ।।

तेरी ही लगन लगी, ओ छलिया,
बनके दिवानी डोले, गूजरिया-२,
मेरे मची जिया में जंग, सम्भाले सम्भले ना ।। २ ।।

रंग तेरे रंग लिया, ओ मोहना,
फीकी फीकी लागे मोहे, ये दुनिया-२,
अब चढ़ा साँवला रंग, निखारे निखरे ना ।। ३ ।।

रंग ली चुनर मैंने, तेरे रंग में,
'हर्ष' बसे तू मेरे, अंग-अंग में-२,
यूँ सँवर गया हर अंग, सँवारे सँवरे ना ।। ४ ।।

(तर्ज : रूत झोलियाँ...)

मेरे श्याम सँवरना छोड़ो-२,
नजरिया लग जायेगी, ओ छलिये ।। टेर ।।

लटके यूँ लट घुँघराली-२,
बिजुरिया गिर जायेगी, ओ छलिये ।। १ ।।

नैनों के खंजर मारे-२,
गुजरिया मर जायेगी, ओ छलिये ।। २ ।।

क्यूँ तान सुरीली छेड़े-२,
बाँसुरिया छल जायेगी, ओ छलिये ।। ३ ।।

तेरी चाल बड़ी है नवाबी-२,
डगरिया हिल जायेगी, ओ छलिये ।। ४ ।।

तुझे देख गुजरिया नाचे-२,
चुनरिया उड़ जायेगी, ओ छलिये ।। ५ ।।

तोहे 'हर्ष' निरखते यूँ ही-२,
उमरिया ढ़ल जायेगी, ओ छलिये ।। ६ ।।

(तर्ज : जैसे निर्धन को मिले...)

मेरे कान्हा की लीला है न्यारी, आज बनके चले नर से नारी,
झोली कान्धे पे लीन्ही लटकाय, कोई गोदना तो लो गुदवाय ।।

किये कजरारे काजल से नैना,
सिर से पैरों तलक पहने गहना,
लहंगा पहना और ओढ़ी है साड़ी,
बनके आया है श्याम लीलहारी,
प्यारी राधा की गलियों में आया,
आके कान्हा ने शोर मचाया,
दिल में आये वो आज लो लिखाय-२,
कोई गोदना तो लो गुदवाय... ।। १ ।।

शोर सुन करके राधा दौड़ी आई,
रूप कान्हा का देख मुस्काई,
बोली लीलहारी इतना मैं चाहूँ,
आज लिखदे वो जो मैं लिखाऊँ,
मेरे सिरपे लिखो गिरधारी,
मेरे माथे पे मदन मुरारी,
मेरे गालों पे श्याम लूँ लिखाय-२,
कोई गोदना मैं लूं गुदवाय... ।। २ ।।

(2)

दृग नैनों में दीन दयाला,
नासिका पे लिखो नन्दलाला,
मेरे होठों पे आनन्द कन्दा,
मेरे गले में गोकुल चन्दा,
लिखो ठोडी पे ठाकुर की लीला,
मेरी छाती पे छैल छबीला,
मैं तो कानों में कृष्ण लूं लिखाय-२,
कोई गोदना मैं लूँ गुदवाय... ।। ३ ।।

लिखदे हाथों पे हलदर के भैया,
दसों ऊँगली पे आनन्द करैया,
पेट पे मेरे लिख परमानन्द तू,
मेरी नाभी पे लिखदे नन्द नन्द तू,
मेरी जाँघों पे लिख जै गोविन्दा,
मेरे घुटनों पे बाल मुकुन्दा,
'हर्ष' चित पे चितचोर लूँ लिखाय-२,
कोई गोदना मैं लूँ गुदवाय... ।। ४ ।।

(तर्ज : बड़ी देर भई नन्दलाला...)

क्यूँ देर करे कान्हुड़ा, है भाग्य मेरा फुट्योड़ा,
बिन तेरे कुँण चीर उढ़ासी-२, थाम मेरा आँसुड़ा रे,
क्यूँ देर करे कान्हुड़ा, है भाग्य मेरा फुट्योड़ा ।। टेर ।।

बित्योड़ा दिन याद करूँ मैं, ''हिवड़ो भर-भर आवै रे''-२,
नरसी जी री-२ लाड कुँवर या ''नानी नीर बहावै रे''-२,
बाबो मोडो बण बैठ्यो इब-२, पड़ग्या म्हाने फोड़ा रे,
क्यूँ देर करे... ।। १ ।।

संता सागै फिरै डोलतो, ''दुनिया घालै हाँसी रे''-२,
तानां मारै-२ सगला घर का, ''भात भरण कुण आसी रै''-२,
माँ को जायो बीर भी कोन्या-२, सगली बात का तोड़ा रे,
क्यूँ देर करे... ।। २ ।।

आणो है तो बेगो आजा, ''मतना देर लगावै रे''-२,
डूँब मरूँली-२ सरवरिये मैं, ''जै तू आज ना आवै रे''-२,
''हर्ष'' सुणाऊँ कीने कान्हा-२, मनड़े री या पीड़ा रे,
क्यूँ देर करे... ।। ३ ।।

(कृष्ण जन्म)

(तर्ज : जीमो जीमो जी दादीजी...)

खुशियाँ मनावो, झूमो नाचो गावो-२,
छाई नन्दजी के आँगणिये बहार, जनम लियो गोपालो... ।।

चान्दी के पलणें में सुत्यो, छोटो सो नन्दलालो,
होले होले डोर हिलावे, मैया देवे झालो,
मैया कान्हूड़े ने निरखे बारम्बार, जनम लियो गोपालो... ।। १ ।।

खूब सजी है गोकुल नगरी, घर घर खुशियाँ छाई,
मात यशोदा दोनूं हाथां, बाँटे आज बधाई,
छायो नन्द जी के हरख अपार, जनम लियो गोपालो... ।। २ ।।

कान्हुड़ो के दरशण तांई, भीड़ घणेरी लागी,
ग्वाल बाल और गूंजरियाँ की, भक्तों किस्मत जागी,
लियो गोकुल में हरी अवतार, जनम लियो गोपालो... ।। ३ ।।

जय जयकार मची कान्हे की, आज बिरज के मांही,
'हर्ष' खुशी सूं नाचे देखो, सगला लोग लुगाई,
लेवो लेवो जी निजरिया उतार, जनम लियो गोपालो... ।। ४ ।।

(सिन्धारा)

(तर्ज : देवरिये की टोपली...)

छोटे से गोपाल का सिन्धारा करवादे माँ,
सिन्धारा करवादे माँ सिन्धारा करवादे माँ ।। टेर ।।

''चन्दन केशर और केवड़ो-२, मल मल आज नुहादे माँ''-२,
छोटे से गोपाल... ।। १ ।।

''शीश किलंगी तन पिताम्बर-२, मुरली हाथ थमादे माँ''-२,
छोटे से गोपाल... ।। २ ।।

''प्यारी प्यारी घणी राचणी-२, मेहन्दी आज मण्डा दे माँ''-२,
छोटे से गोपाल... ।। ३ ।।

''बिठा गोद में कान्हुड़े ने-२, माखन आज खुवादे माँ''-२,
छोटे से गोपाल... ।। ४ ।।

''हर्ष'' लाल का लाड लडादे-२, सिर पर हाथ फिरादे माँ''-२,
छोटे से गोपाल... ।। ५ ।।

(तर्ज : शिव शंकर चले कैलाश...)

मेरे उलझे हुये है बाल, हाथ मेरे मेंहन्दी लगी,
जरा सुलझा दे ओ नन्द लाल, हाथ मेरे मेंहदी लगी ।। टेर ।।

होले से सरक गई सिर से चुनरिया-२,
जरा आके उढ़ा दे नन्दलाल, हाथ मेरे मेंहदी लगी ।। १ ।।

माथे पे लगाई थी वो गिर गई बिन्दिया-२,
जरा आके लगादे नन्दलाल, हाथ मेरे मेंहदी लगी ।। २ ।।

खुल गया बैरी मेरे जूड़े का गजरा-२,
जरा आके सजा दे नन्दलाल, हाथ मेरे मेंहदी लगी ।। ३ ।।

'हर्ष' बिलोया मैंने मटकी में माखन-२,
जरा भोग लगाले नन्दलाल, हाथ मेरे मेंहदी लगी ।। ४ ।।

(छप्पन भोग)

(तर्ज : सैयाँ ले गई जिया...)

कान्हा खा ले रे जरा, छप्पन भोग सजा,
दाता मानूंगा मैं, बड़ा एहसान तेरा ।। टेर ।।

हलवा, इमरती रसगुल्ला, माखन, प्रेम से खा लल्ला,
बरफी, सजे बुन्दी भुजिया, रबड़ी, जलेबी केशरिया,
मोतीचूर के लड्डू तू, चखले जरा ।। १ ।।

पेड़े, कलाकन्द मालपुआ, चमचम, दनादन खा छलिया,
पूड़ी, कचौड़ी गजरैला, सब्जी, दाल है पंचमेला,
फोगले का रायता है, प्याले में भरा ।। २ ।।

चटनी, समोसे खीर दही,माठी, पकौड़ी बालूशाही,
घेवर, मलाई चीनी का, आजा, मजा ले फीणी का,
चनाचूर दिल्लीवाला, बड़ा कुरमुरा ।। ३ ।।

(2)

केला, सफेदा सीताफल, आडू, सन्तरा पानीफल,
लीची, मुसम्मी बेदाना, चीकू, पपीता खा जाना,
चान्दी का गिलास सोहे, रस से भरा ।। ४ ।।

मेवे, सजे क्या देरी है, किसमिस, बादाम व गिरी है,
पिस्ता, छुआरा खुरमानी, काजू, अंजीर है अफगानी,
दूध का कटोरा कान्हा, पीले रे जरा ।। ५ ।।

खाकर, जरा कुल्ला करले, नागर, पान का बीड़ा ले,
धनिया, सौंफ और चूरी है, आजा, भला क्या दूरी है,
'हर्ष' कहे सेवक की, आस पुरा ।। ६ ।।

नौकरी न मिल सके जिसको तो दो हजार की ।
आज पी कर गा रहा महिमा मेरे सरकार की ।।

(तर्ज : शंकर दया हैं बाँटते...)

बिकते सदा हो साँवरे, भगतों के प्यार में,
खाते हो सूखी रोटियाँ, दीनों के द्वार पे ।। टेर ।।

जीता तुझे सुदामा ने, तन्दुल की आड़ में,
बदले में तूने दे दिया, छप्पर ही फाड़ के ।। १ ।।

बैठी थी शबरी रामजी, तेरे इंतजार में,
जूठे ही बेर खा लिये, भिलनी के प्यार में ।। २ ।।

रूठी जो बेटी जाट की, तुझको पुकार के,
खीचड़ तू उसका खा गया, परदे की आड़ में ।। ३ ।।

अमृत भरा था 'हर्ष' क्या, प्रेमी के साग में,
खाने गया विदुर के घर, मेवों को त्याग के ।। ४ ।।

(तर्ज : क्या खूब लगती हो...)

श्रृंगार कन्हैया का, बड़ा प्यारा लगता है,
सज धज के, औरों से, न्यारा लगता है,
तीन लोक में सुन्दर श्याम हमारा लगता है ।। टेर ।।

अधरों पे सजे है मुरली, हाँ मुरली,
हम भक्तों की नींदे इसने हर ली,
नैनों से करे है घायल, हाँ घायल,
ये रूप निरख हो गये तेरे कायल ।। सजधज के... ।। १ ।।

क्यूँ होठ रचाई लाली, हाँ लाली,
दिवानों के मन को मोहने वाली,
होले से तेरा मुस्काना, मुस्काना,
हम भगतों को कर देता दिवाना ।। सजधज के... ।। २ ।।

घुँघराले गेसू लटके, हाँ लटके,
श्रृंगार तेरा आज सजा है हटके,
मनमोहक अदा निराली, हाँ निराली,
कहे 'हर्ष' हमें वश में करने वाली ।। सजधज के... ।। ३ ।।

(तर्ज : घुँघरू टूट गये...)

ना जाने हुई क्या बात, हुई रे आँखों से बरसात,
कन्हैया रूठ गये-२ ।। टेर ।।

इक गुजरी नन्द के घर आई, मैया को आकर बतलाई,
ये चोर है माँ तेरा लाला, मेरा माखन इसने खा डाला,
ये हुआ बड़ा शैतान, तो खींचे माँ ने उसके कान,
कन्हैया रूठ गये... ।। १ ।।

दूजी ने आकर बतलाया, नटखट है माँ तेरा जाया,
हमें तंग करे ये राहों में, भर लेता अपनी बाहों में,
तू करदे इसका ब्याह, तो लाठी लेकर भागी माँ,
कन्हैया रूठ गये... ।। २ ।।

(2)

तीजी ने आकर की चुगली, जो इसकी आदत ना बदली,
होगा इक दिन झंझट भारी, हमें तंग करे बारी बारी,
माँ हुई क्रोध से लाल, लाल के कर दिये लाल ही गाल,
कन्हैया रूठ गये... ।। ३ ।।

मुझे भोर भये तूने भेजा, ना काम किया मैंने दूजा,
गउओं को चरा करके लाया, अब साँझ ढली घर में आया,
ना लिया है इकपल साँस, करे तू नहीं मेरा विश्वास,
कन्हैया रुठ गये... ।। ४ ।।

माँ देखके आँसू पिघलाई, गुजरी को झट से दौड़ाई,
उसे बिठा गोद में प्यार करे, कहे 'हर्ष' घनी मनवार करे,
ये जले है तुझसे लाल, कहे रे मुझसे झूठा हाल,
कन्हैया छूट गये... ।। ५ ।।

(तर्ज : तेरी याद में जलकर...)

तेरी श्याम करेंगे रखवाली, तू नाम सुमर के देख तो ले,
तकदीर का खुल जाये ताला, जरा ध्यान तू धर के देख तो ले ।।

तू प्रेम सगाई करले रे, गिरधर गोपाल कन्हैया से,
अमृत में बदल देगा विष को, जरा प्रेम तू करके देख तो ले,
तेरी श्याम करेंगे रखवाली... ।। १ ।।

तू करुण पुकार लगा प्यारे, करुणा से भरे इस सागर में,
तेरे भात भरन झट आयेगा, विश्वास तू करके देख तो ले,
तेरी श्याम करेंगे रखवाली... ।। २ ।।

ऐ 'हर्ष' तू कर खुद को अर्पण, घनश्याम मुरलिया वाले को,
हर अंग श्याम मय हो जाये, तू करके समर्पण देख तो ले,
तेरी श्याम करेंगे रखवाली... ।। ३ ।।

(तर्ज : मेरा रंग दे बसन्ती चोला...)

अब आजा बाँसुरिया वाले अब आजा,
अब आजा बाँसुरिया वाले ओये आजा बाँसुरिया वाले,
आजा, आजा बाँसुरिया वाले ।। टेर ।।

द्वापर युग में इस धरती पर कान्हा तूने जन्म लिया-२,
अत्याचारों ने कलयुग में इस धरती को जकड़ लिया,
आज धरा के कष्ट मिटाजा-२, संकट हरने वाले, आजा ।।

ग्वाले बनकर जिन गउओ को तूने इतना प्यार दिया-२,
उसी गाय पर निज बेटो ने कितना अत्याचार किया,
आकर अपने गले लगाजा-२, गउओ के रखवाले, आजा ।।

अमन चैन हो इस भूमि पर ऐसा तू वरदान दे-२,
भटक गया है आज का मानव गीता वाला ज्ञान दे,
'हर्ष' हमे तू राह दिखाजा-२, ओ मोहन मतवाले, आजा ।।

(तर्ज : श्याम तेरी बंशी पुकारे...)

मेरे दीनानाथ तेरे लाखों है नाम,
चाहे राधे श्याम बोलो चाहे सीता राम,
भगतों को नाम तेरा भजने से काम,
चाहे राधे श्याम बोलो चाहे सीताराम ।। टेर ।।

त्रेता में बन करके रामजी पधारे,
द्वापर में बन श्रीकृष्ण अवतारे,
कलयुग में-२, गूँजे बाबा श्यामजी का नाम,
चाहे राधे श्याम... ।। १ ।।

पावन अवध वासी रामजी कहाये,
कुँज गली में कान्हा रास रचाये,
श्याम जी का-२, खाटू में प्यारा सा धाम,
चाहे राधे श्याम... ।। २ ।।

मर्यादा सिखलाते रामजी हमारे,
कर्म किये जा बोले राधे जी के प्यारे,
'हर्ष' मेरे-२, श्याम लेते हारे को थाम,
चाहे राधे श्याम... ।। ३ ।।

(तर्ज : मोहब्बत की झूठी...)

जुदाई के आँसू, कन्हैया सताये,
मगर श्याम बंशी, बजैया न आये ।। टेर ।।

न हालात पूछे, न आकर सम्भाला,
अरे बेवफा तूने, मेरा दम निकाला,
मेरी कश्ति के, वो खिवैया न आये ।। १ ।।

मेरी उनसे कोई, शिकायत नहीं है,
मगर आज दिल की, हालत बुरी है,
अरे राधा के, मन बसैया न आये ।। २ ।।

अगर अब ना आये तो, जी ना सकेगें,
तुम्हारे बिना बोलो, कैसे रहेगें,
कहे 'हर्ष' क्यूँ, दिल जलैया न आये ।। ३ ।।

(तर्ज : दुनिया चले ना श्रीराम के बिना...)

मुख से हरि का जब नाम निकले,
राम निकले या घनश्याम निकले ।। टेर ।।

रामजी की दुनिया दिवानी है, श्याम जी का कोई ना सानी है,
इकबर नहीं हर बार निकले ।। राम निकले... ।। १ ।।

त्रेता में राम जी पधारे थे, द्वापर में कृष्ण अवतारे थे,
कलयुग में श्यामजी का नाम निकले ।। राम निकले... ।। २ ।।

रामजी धनुष के धारी हैं, कृष्ण सुदर्शन धारी हैं,
लीले पे सवार होके श्याम निकले ।। राम निकले... ।। ३ ।।

विष्णु धरा पर आये हैं, राम घनश्याम बन आये हैं,
'हर्ष' सुबह और शाम निकले ।। राम निकले... ।। ४ ।।

(तर्ज : पनवा खइले ते मनवा...)

मुरली वाले तू मुरली बजइदे,
गोरी गोरी राधा को कान्हा नचइदे ।। टेर ।।

तेरी मुरलिया की राधा दिवानी,
सजनी के खातिर पड़ेगी बजानी,
थोड़ा हमका-२, भी जलवा दिखइदे ।। गोरी गोरी... ।। १ ।।

मीठी मुरलिया जमना पे बाजी,
तेरी गुजरिया मस्ती में नाची,
जरा होले से-३, ढुमका लगाइदे ।। गोरी गोरी... ।। २ ।।

मुरली का एइसन छेड़ो तराना,
लचके कमरिया देखे जमाना,
तेरी बंशी का-२, जादू चलइदे ।। गोरी गोरी... ।। ३ ।।

मुरली बजे तो मनवा खिले है,
नैनों के रस्ते दो दिल मिले है,
'हर्ष' मन की-२, कली तू खिलइदे ।। गोरी गोरी... ।। ४ ।।

(तर्ज : मैं बेनाम हो गया...)

कान्हा ओ कान्हा, तेरा दिवाना, आ गया बाबा, अब तेरे धाम,
तू सुने ना सुने तेरा काम, मैं तेरा दास हो गया ।। टेर ।।

दूजा न कोई जग में हमारा, रोते हुये मैंने तुझको पुकारा,
नैया का मेरी तूही किनारा, हारे को बाबा दे दो सहारा,
आके सम्भालो, मुझको हे दाता, रखले तू, अब मुझे, तेरे पास,
मैं तेरा दास हो गया... ।। १ ।।

मेरा ये जीवन तू ही सम्भाले, बीच भँवर से तू ही निकाले,
डूब रहा हूँ मुझको बचाले, चरणों में तेरे मुझको बिठाले,
दीनों के दाता, हारे के साथी, ऐसे ना, कर मुझे, तू निराश,
मैं तेरा दास हो गया... ।। २ ।।

सेवक तेरे दरपे खड़ा है, बालक तेरा जिद पे अड़ा है,
'हर्ष' तुम्हारा नाम बड़ा है, मुझको तुमसे काम बड़ा है,
तू ना सुने तो, कौन सुनेगा, कर जरा, पूरी तू, मेरी आस,
मैं तेरा दास हो गया... ।। ३ ।।

(तर्ज : जिया बेकरार है...)

भगतों की पुकार है, गूँजे जै जै कार है,
आजा मेरे साँवरे, तेरा इंतजार है ।। टेर ।।

ओऽऽऽ फूलों की लड़ियों से बाबा, ''ये सिणगार सजाया''-२ हो,
अन्तर केशर की खुशबू से, ''आँगन है महकाया''-२ ये,
क्या प्यारा सिणगार है,गजरों की बहार है,
आजा मेरे साँवरे... ।। १ ।।

ओऽऽऽ भगतों ने मिल करके बाबा, ''तेरी ज्योत जगाई''-२ हो,
लीले वाले जल्दी आजा, ''करले आज सुनाई''-२ तू,
सच्चा ये दरबार है, बस तेरी दरकार है,
आजा मेरे साँवरे... ।। २ ।।

ओऽऽऽ खीर चूरमा माखन मिसरी, ''छप्पन भोग लगाया''-२ हो,
आजा प्यारे भोग लगाले, ''क्यूँ इतना तरसाया''-२ हाय,
'हर्ष' करे मनुहार है, निरखे बारम्बार है,
आजा मेरे साँवरे... ।। ३ ।।

(तर्ज : हम तो तेरे आशिक हैं...)

हम तो तेरे सेवक हैं बरसों पुराने, चाहे तू माने चाहे ना माने,
दर पे चले आये हैं तुझको रिझाने, चाहे तू थामे चाहे ना थामे ।।

आये तेरे दर पे मनाने,
अरमां लेकर के, तुझमें खोकर के, ओ मेरे कान्हा-२,
आये तेरे चरणों में सिर को झुकाने, चाहे तू थामे चाहे ना थामे ।। १ ।।

मीठे मीठे भजनों से तुझको,
आज रिझायेंगे, अपना बनायेंगे, ओ मेरे कान्हा-२,
भजनों की सौगात लाये भेंट चढ़ाने, चाहे तू थामे चाहे ना थामे ।। २ ।।

महिमा तेरे नाम की बड़ी है,
तू दिलवाला है, तू रखवाला है, ओ मेरे कान्हा-२,
'हर्ष' हम तो आये हैं बिगड़ी बनाने, चाहे तू थामे चाहे ना थामे ।। ३ ।।

(तर्ज : मेरे साँवरे सलोने साँवरिया...)

मेरे साँवले सलोने तुम्हारा, जग यूँ ही दिवाना नहीं है ।। टेर ।।

तूने इन्द्र का गर्व मिटाया, मोह ब्रह्मा का भंग कराया,
तूने अर्जुन के गर्व को तोड़ा, चला कोई बहाना नहीं है ।। १ ।।

तूने तंदुल सुदामा के छीने, बेर भिलनी के जूठे है खाये,
तूने साग विदुर घर खाया, प्यार पड़ता पुराना नहीं है ।। २ ।।

तूने करमा के खीचड़ को खाया, भात नानी का पल में भराया,
तूने नरसी की हुण्डी सिकारी, आस्था का पैमाना नहीं है ।। ३ ।।

तूने हाथी को ग्राह से उबारा, साँचे मन से जो नाम पुकारा,
तूने पापी अजामिल सा तारा, करुणा का ठिकाना नहीं है ।। 4 ।।

तूने भक्त प्रहलाद बचाया, विष मीरा का अमृत बनाया,
'हर्ष' लंका विभिषण को सौंपी, भगती सा खजाना नहीं है ।। ५ ।।

(तर्ज : नाचे गोरी बाजे रे...)

नाचे राधा बाजे रे रंगीले की मुरलिया-२,
आज कन्हैया संग ''राधा नाच रही''-२,
छन छन, छन छन बाजे रे पायलिया-२,
बज रहे ढोलक चंग ''राधा नाच रही''-२ ।। टेर ।।

गोकुल में फागुन की मस्ती है छाई,
आया बसन्त रुत नाचन की आई,
जियरा लुभाये पवन पुरवाई,
होले से कान्हा ने बन्शी बजाई,
ढोलक और नगाड़ा बाजे,
बाजे ढफली चंग, ''राधा नाच रही'' ।। १ ।।

(2)

फागुन में मस्ती की भंग पिलादे,
प्यासे दिलों में उमंग जगादे,
ओ रे कन्हैया ऐसा रंग चढ़ादे,
झूम के नाचू रे चंग बजादे,
अरमानों की आज दिलों में,
छिड़ि हुई है जंग, ''राधा नाच रही'' ।। २ ।।

बंशी बजैया कैसी बंशी बजाई,
उसपे चले रे पवन पुरवाई,
राधा पे कैसी रवानी ये छाई,
'हर्ष' दिवानी होके सुध बिसराई,
राधा नाचे नाचे रे गुजरिया,
रंगी श्याम के रंग, ''राधा नाच रही'' ।। ३ ।।

(तर्ज : पार करो मेरा बेड़ा भवानी...)

आई बिरज में होली रे देखो आई बिरज में होली,
भींगे रे राधा की चोली बिरज में आई बिरज में होली ।।

कुँज गलिन में शोर मचे है, रंग अबीर गुलाल उड़े है,
सखियों के संग राधा आई, ग्वालों के संग कृष्ण कन्हाई,
नाचे रे ग्वालों की टोली बिरज में आई बिरज में होली ।। १ ।।

राधा ने ज्यूँ रंग लगाया, कान्हा ने उसे अंग लगाया,
मारी भरके जब पिचकारी, भींगी चुनरिया भींगी रे साड़ी,
छेड़े रे हमजोली बिरज में, आई बिरज में होली ।। २ ।।

राधा बोली सुनले रे कान्हा, होली का बस है इक बहाना,
जान गई मैं तेरी शरारत, जाके करुँगी माँ से शिकायत,
मैं हूँ बिल्कुल भोली बिरज में आई बिरज में होली।। ३ ।।

थामी कलइयां बोले यूँ कान्हा, मुझको तो भाये तुझको सताना,
'हर्ष' हमारा जन्मों का बन्धन, आ गोरी रंगले होली में तन मन,
मारो ना नैनों से गोली बिरज में आई बिरज में होली ।। ४ ।।

(तर्ज : मुख सोणा नहीं लगदा...)

हरि भजन करन को वाणी मिली,
हरि महिमा मुख से गाइये ।। टेर ।।

प्रभु दर्श करन दो नैन मिले,
नैनों में ईश बसाइये ।। १ ।।

हरि कथा सुनन दो कान मिले,
कानों में रस घुलवाइये ।। २ ।।

हमें दान करन दो हाथ मिले,
निर्धन को मत ठुकराइये ।। ३ ।।

हमें तीर्थ गमन दो पैर मिले,
तीर्थाटन करने जाइये ।। ४ ।।

शुभ कर्म करन ये जन्म मिला,
मत बिरथा ''हर्ष' बिताइये ।। ५ ।।

दोहा : पीत वसन सिर मुकुट सुहाना, गल बैजन्ती हार ।
अधरो उपर मुरली सोहे, चमक रहा सिंगार ।।

(राग रचयिता - ऋचा शर्मा)

वारी मैं वारी जावाँ सदके जी सदके,
सिंहासन पर श्याम सलोना बैठा देखो सजके ।। टेर ।।

कारी कजरारी प्यारी अँखियों में कजरा,
मोतियों के हार सोहे फूलों का गजरा,
मोर मुकुट तेरे सिर पे बिराजे,
पीत वसन कान्हा तन तेरे साजे,
बनड़ा सा लागे मेरा कान्हा सज धज के ।।
वारी मैं वारी जावाँ सदके.. ।। १ ।।

(2)

चन्दन का टीका माथे साँवरे के सोहे,
कानों के कुण्डल मनवा हम सबका मोहे,
साँवली सलोनी कान्हा चितवन तुम्हारी,
मन को लुभाने वाली छवि जग से न्यारी,
मीठी मुस्कान बैठी मुखड़े पे जँचके ।।
वारी मैं वारी जावाँ सदके.. ।। २ ।।

घुँघराले बाल सोहे टेढ़ी मेढ़ी चाल है,
'हर्ष' कहे रे तेरा रुतबा कमाल है,
भगतों पे चढ़ गया नशीला खुमार है,
होश उड़ाये तेरा साँवला दीदार है,
मनवा लुभाया तेरी मुरली ने बजके ।।
वारी मैं वारी जावाँ सदके.. ।। ३ ।।

(तर्ज : ओ साहिबा... फिल्म-दिल है तुम्हारा)

ओ साँवरे, ओ साँवरे, ओ साँवरे, ओ साँवरे-२,
मुझे भी दरपे तू बुलायेगा, है इतनी आरजू मेरी ।। टेर ।।

सूनी मेरी रातें, सूने हैं मेरे दिन,
सूना मेरा मनवा, सूना है ये जीवन,
सुनी है मेरी गली, सूना है मन उपवन,
सूना है सारा जहाँ, श्याम तुम्हारे बिन ।। ओ साँवरे... ।।

अपने सेवक को, तुमने भुलाया है,
प्रेमी को काहे, तुमने रुलाया है,
दिल पे गुजरी है, दिल मेरा जाने,
भगतों की हालत को, कैसे तू जाने ।। ओ साँवरे.. ।।२ ।।

पलकें बिछी मेरी, रस्ता निहारूँ मैं,
पल पल ओ कान्हा, तुझको पुकारूँ मैं,
सहने नहीं पाऊँ, अब ये तन्हाई,
'हर्ष' कन्हैया की, याद बड़ी आई ।। ओ साँवरे... ।। ३ ।।

(तर्ज : क्या दिल ने कहा...)

यूँ दिल में बसा, क्या तुमने किया-२,
नैनों में तू ही, साँसों में तू ही, तू ही बसे जिया में,
दिल को लुभाया, अपना बनाया, जादू ये क्या किया रे,
ओ कान्हाऽऽऽऽऽ, यूँ दिल में बसा.... ।। टेर ।।

कान्हा कान्हा जपता हूँ, तुझमें खोया रहता हूँ,
सच्चा साथी तू मेरा, ''सारे जग से कहता हूँ''-२,
तुझको रिझाना, लागे सुहाना, मेरे सलोने कान्हा,
ओ कान्हाऽऽऽऽऽ, यूँ दिल में बसा... ।। १ ।।

मैं तो तेरा हूँ बालक, तेरी किरपा का याचक,
जान के मुझको नालायक, ''रहने दे तेरा पायक''-२,
सेवा न जानूं, पूजा न जानूं, तुझको मैं अपना मानूं,
ओ कान्हा ऽऽऽऽऽ, यूँ दिल में बसा... ।। २ ।।

मुझसे ना रखना दूरी, आशा ये करना पूरी,
बाँधे यूँ मुझको रखना, ''तेरी ये प्रीत की डोरी''-२,
दिल में तुम्हारे 'हर्ष' को प्यारे, हर पल यूँ ही बसाना,
ओ कान्हाऽऽऽऽऽ, यूँ दिल में बसा... ।। ३ ।।

(तर्ज : भरी दुनिया में आखिर...)

बड़ी आशा ले आखिर मैं, तेरे दरबार में आया,
दिवाना हो गया दर का, क्यूँ दिवाने को बिसराया ।। टेर ।।

सुना है श्याम तू हरदम, निभाता साथ हारे का,
बता इस गम के मारे को, भला तूने क्यूँ ठुकराया ।। १ ।।

झुका हूँ चरणों में तेरे, दया का हाथ रख दे तू,
जिन्हें अपना समझता था, उन्हीं अपनों ने तड़पाया ।। २ ।।

दया का सिन्धु तू गहरा, दयालु नाम है तेरा,
तेरी करुणा की लहरों में, ठिकाना 'हर्ष' ने पाया ।। ३ ।।

(तर्ज : महकी महकी जुल्फे हैं : एल्बम हंस राज हंस)

किसने सजाया तेरा प्यारा सिणगार है,
इसमें झलक रहा भगतों का प्यार है,
भगतों का प्यार बाबा भगतों का प्यार है,
वो देखो, वो देखो, वो देखो सोणा लागे श्याम सरकार है ।। टेर ।।

किसने बनाया तेरा प्यारा प्यारा गजरा,
बड़ी बड़ी अँखियों में कारा कारा कजरा,
तिरछी अदायें तेरी तीखी तलवार है ।। वो देखो... ।। १ ।।

मोर मुकुट तेरे गल सोहे हार है,
पीली पीली पगड़ी का रूतबा अपार है,
पहले कभी देखा नहीं ऐसा सिणगार है ।। वो देखो... ।। २ ।।

बड़े ही नसीबों वाला तुझको सजाता है,
'हर्ष' कहे रे तेरा प्यार वो ही पाता है,
भगत सजाके बैठे तेरा दरबार है ।। वो देखो... ।। ३ ।।

(तर्ज : मैंने जो पल्लु गिरा दिया...)

तेरे दर पे ऐसा खिंचाव है, तेरा न कोई जवाब है,
दिवाने ने तुझको पा लिया, तूने जो अपना बना लिया ।।

तेरे श्री चरणों की लागी लगन,
तेरी भगती में मैं रहता मगन,
निशदिन मैं गाऊँ तेरा भजन,
तूने जो अपना बना लिया ।। १ ।।

मोपे तेरी खुमारी छाने लगी,
रातों को बड़ा तड़पाने लगी,
अब याद तुम्हारी आने लगी,
तूने जो अपना बना लिया ।। २ ।।

दिवाना दिल अब गाये यही,
ऐ श्याम मुझे बस भाये तू ही,
इस 'हर्ष' को चैन न आये कहीं,
तूने जो अपना बना लिया ।। ३ ।।

(तर्ज : याद में तेरी जाग...)

खाटूवाले तुम्हारे दर्शन को, रातदिन दास ये तरसता है,
हर घड़ी तेरा नाम ले लेकर, सिसकी भर-भर के रोया करता है ।।

तेरा बेटा उदास है बाबा, लीले चढ़ करके जल्दी आजा तू,
तुझसे मिलने की आस में हरपल, तेरा रस्ता निहारा करता है ।।
खाटूवाले तुम्हारे दर्शन ... ।। १ ।।

ऐसी है क्या तुम्हारी मजबूरी, अपने सेवक से कैसी ये दूरी,
तेरे चरणों की धूल मिल जाये, बस यही ख्वाब देखा करता है ।।
खाटूवाले तुम्हारे दर्शन ... ।। २ ।।

तेरा आना न हो अगर मुमकिन, मुझको ही दर पे तू बुलाले रे,
जाने कब मुझपे हो करम तेरा, 'हर्ष' दिनरात आहें भरता है ।।
खाटूवाले तुम्हारे दर्शन ... ।। ३ ।।

(तर्ज : ना मंदिर में रहता है...)

ना महलों की इच्छा है, ना दौलत के भण्डार की,
मैं तो दीनानाथ चाहूँ, भगती तेरे द्वार की ।। टेर ।।

दुनिया भी देखी दौलत भी देखी,
लेकिन तुम्हारी चौखट ना देखी,
मुझको भी मिल जाये थोड़ी किरपा लखदातार की ।। १ ।।

मतलब का है ये दुनिया का मेला,
कितनी मुसीबत कितना झमेला,
अब तो जाके ड्योढी चूमूं कलयुग के अवतार की ।। २ ।।

दीनों को मिलता है तेरा सहारा,
भगतों की नैया का तू ही किनारा,
मुझपे भी पड़ जाये दृष्टि खाटू के सरदार की ।। ३ ।।

चरणों में तेरे मेरा ठिकाना,
'हर्ष' कभी ना मुझको भुलाना,
सीने में तस्वीर बसाई लीले के असवार की ।। ४ ।।

(तर्ज : कलियों का चमन...)

भगतों पे रहम ये करता है,
अंधा आँखें पाता है, लंगड़ा दौड़ा आता है,
बाँझड़ पूत खिलाता है, गूंगा वाणी पाता है ।। टेर ।।

गज की करुण पुकार सुनी तो, झट से दौड़ा आया,
क्रूर काल से निज सेवक को, पल में आन बचाया,
भगतों के दुखड़ों को हरता है ।। १ ।।

करमा की जिद के आगे ये, इक पल ना रूक पाया,
बड़े प्रेम से साँवरिये ने, जाय खीचड़ा खाया,
भगतों की जिद पे झुकता है ।। २ ।।

नरसी के विश्वास की हुण्डि, पल भर में सिकराई,
जहर का प्याला बड़े प्रेम से, पी गई मीरा बाई,
अमृत में विष को बदलता है ।। ३ ।।

दुनिया से जो हार के आया, उसका साथ निभाया,
'हर्ष' कहे खाटू वाले की, कैसी अद्‌भुत माया,
भगतों का दामन भरता है ।। ४ ।।

(तर्ज : कितनी हजार माला फेरी हनुमान...)

हँस के दातार तूने, दिया शीश का दान,
हो गया कलयुग तेरे नाम,
सारी दुनियाँ में गूँजे बाबा, श्याम तेरा नाम-२ ।। टेर ।।

हारे का तू साथ निभाये तेरी लीला न्यारी,
याचक की झोली भरते हो बाबा लखदातारी,
माँ की आज्ञा का तूने, किया सम्मान, हो गया कलयुग...।। १ ।।

निर्बल का रक्षक है मेरा बाबा खाटू वाला,
दीन दुःखी की लाज बचाये भगतों का रखवाला,
शंकर से पाये बाबा, तूने तीन बाण, हो गया कलयुग...।। २ ।।

जान के तेरी शक्ति कान्हा, छद्‌म भेष अपनाया,
ब्राह्मण का धर रूप श्याम ने शीश दान में पाया,
छलिये से पाया बाबा, तूने श्याम का नाम, हो गया कलयुग...।। ३ ।।

खाटू की पावन भूमि पर बाबा आप पधारे,
हर कोने में गूँज रहे हैं तेरे ही जैकारे,
'हर्ष' बनाया तूने, खाटू निज धाम, हो गया कलयुग...।। ४ ।।

(तर्ज : कभी गम से दिल लगाया...)

ऐ हारे के सहारे, ऐ श्याम जल्दी आ रे,
सेवक तेरा पुकारे, सेवक तेरा पुकारे ।। टेर ।।

तेरे सिवा ना बाबा, दुनियाँ में अब हमारा,
गिरते हुये को दे दे, आ करके तू सहारा,
''गहरे भँवर में कश्ति-२'', ''डूबे है तू बचा रे''-३ ।। १ ।।

अपना बनाके मुझको, अपनों ने ही है लूटा,
कल तक जो थे हमारे, अब साथ उनका छूटा,
''बिल्कुल हूँ मैं अकेला-२'', ''मेरा साथ तू निभा रे''-३ ।। २ ।।

सुनता हूँ तू शरण में, दीनों को है बिठाता,
हारे हुए का साथी, दुनिया में तू कहाता,
'ये 'हर्ष' जग से हारा-२'', ''करूणा जरा दिखा रे''-३ ।। ३ ।।

(तर्ज : मैं तो आरती उतारूँ रे...)

मैं तो साँवरे बिहारी पेऽऽऽ, बलिहारी जाऊँ रे-२,
जय जय खाटू के वासी, जय जय श्याम-२ ।। टेर ।।

बड़ा सुन्दर है दरबार, ''भगतो खाटू में''-२,
बड़ा प्यारा सजे सिंगार, ''भगतो खाटू में''-२,
मैं तो नाचूँ झूम झूम, चौखट को चूम चूम-२,
श्याम रिझाऊँ रे, सलोना मेरा श्याम रिझाऊँ रे ।। १ ।।

छाये फागुन की देखो बहार, ''भगतो खाटू में''-२,
उड़े रंग अबीर गुलाल, ''भगतो खाटू में''-२,
होली की धमाल पर, ढफली की ताल पर-२,
नाचूँ मैं गाऊँ रे, दिवाना होके मस्ती लुटाऊँ रे ।। २ ।।

लागे ग्यारस को भीड़ अपार, ''भगतो खाटू में''-२,
गूँजे बारस को जै जैकार, ''भगतो खाटू में''-२,
हाथों को पसार के, 'हर्ष' कहे द्वार पे-२,
शीश नवाऊँ रे, चरणों में तेरे शीश नवाऊँ रे ।। ३ ।।

(तर्ज : मैं छोरा राजस्थानी...)

तेरे दर पे लीला नाचे, तेरा जग में डंका बाजे,
जो भी तेरे द्वारे आया, तेरा होके रह गया,
वो श्याम दिवाना हो गया, वो श्याम दिवाना हो गया-२ ।।

एक बार जो सेवक तेरा, खाटू नगरी जाये,
चुम्बक सा तू खींच के उसको, बारम्बार बुलाये,
देख के तेरा रूप सलोना, सुधबुध सारी खो गया,
वो श्याम दिवाना ।। १ ।।

साँझ सवेरे फिर वो तेरे, नाम की माला जपता,
पेट और परिवार की उसके, तू ही चिन्ता रखता,
उसे फिकर क्या श्याम धणी जो, मस्ती में तेरी खो गया,
वो श्याम दिवाना... ।। २ ।।

कलिकाल के देव तुम्हारी, लीला जग से न्यारी,
घर घर तेरी ज्योत जले है, ध्याये दुनिया सारी,
'हर्ष' कहे संसार में मेरे, श्याम का चर्चा हो गया,
वो श्याम दिवाना... ।। ३ ।।

(तर्ज : सारे जग से साँवरे...)

देता हरदम साँवरे, हारे का तू साथ-२,
मैं भी जग से हार के आया, थामले मेरा हाथ ।। टेर ।।

रो रही आँखे मेरी, हँसता जमाना है,
मुश्किलों में घिर गया, तेरा दिवाना है,
बिन तेरे अब कौन सुने, मेरे दिल की बात,
मैं भी जग से... ।। १ ।।

हर कदम पर क्यूँ भला, मैं मार खाता हूँ,
जीतना चाहूँ मगर मैं, हार जाता हूँ,
आजा अब तू देखले, मेरे ये हालात,
मैं भी जग से... ।। २ ।।

तू नहीं सुनता अगर, किसको बताता मैं,
घाव जो दिल पे लगे, किसको दिखाता मैं,
'हर्ष' जमाने ने दिये, कितने ही आघात,
मैं भी जग से... ।। ३ ।।

(तर्ज : मतना मारे बोल साँवरा...)

खीर चूरमों नित की खावे बाँध के पीली पागड़ी,
मुझ गरीब की लाज राखले खाले खाटी राबड़ी ।। टेर ।।

माल मलीदा रोज ही खावे, रूखी सुखी खाले रे,
मोटा मोटा रोट बणाया, आके भोग लगाले रे,
भोलो ढ़ालो भगत खड्यो है, भर पाणी की गागरी ।। १ ।।

रोटी माही भाव भर्या है, दाल प्रेम के तड़के री,
गट गट पीले छाछ राबड़ी, श्याम गले ना अटकेली,
भगतां के घर रोज ही जीमे, मेरे क्यांकि आँट जी ।। २ ।।

करमा जैसी जिद ना जाणूँ, प्रेम न मीरा बाई सो,
'हर्ष' कहवे विश्वास भी कोन्या, नरसी नानी बाई सो,
बेगो सो तू जीम रे बाबा, भूख मने भी लागरी ।। ३ ।।

(हरियाणवी भजन)

(तर्ज : मेरा बाबू छैल छबिला...)

बेगी चाल जाटणी श्याम धणी के जाणां सै,
रोट बणाले, चूंटिया लगाले, मिलके खाणा सै ।। टेर।।

फागण में श्याम धणी का मेला लागे भारी,
तन्ने सागे ले चालूं, बेगी करले त्यारी,
चूरमा बणाले, मेवे मिलाले, भोग लगाणां सै ।। १ ।।

बणिये के जाकर स्याणी, रेशमी कपड़ा ल्याऊं,
मैं श्याम धणी का सोणा, एक निशान सिमाऊँ,
करले तू त्यारी, श्याम की अटारी, जाय चढ़ाणा सै ।। २ ।।

मैं दूध काढ कर ल्याया, तैं ताजा दही जमादे,
बाबा मखनी का भूखा, जाकर के भोग लगादे,
भजन सुणाके, ढुमके लगाके, श्याम रिझाणा सै ।। ३ ।।

खाटू में रंग उड़ेगा, फागण की रूत में भारी,
तैं 'हर्ष' चाल मेरे सागे, रंगणा सै श्याम बिहारी,
होले तू सागे, बाबा के जाके, रंग लगाणा सै ।। ४ ।।

(तर्ज : घस लाये चंदन केसरी नंदन...)

मिट जाये झटपट, भगतों के संकट, भजले श्याम सरकार,
जय हो लीले के असवार, साँचों तेरो यो दरबार ।। टेर ।।

मोर छड़ी के जादू से भई, ''ताले अपने आप खुले''-३,
ना जाने किस भेष में बाबा, ''भगतो के संग आन मिले''-३,
बना है मंदिर, बड़ा ही सुन्दर-२, खाटू में सरकार ।। १ ।।

निज भगतों के मेरा बाबा, ''संकट सारे हरता है''-३,
बिन मांगे ही ये दातारी, ''झोली सबकी भरता है''-३,
बन कर जौहरी, खोल तिजोरी-२, बैठा लखदातार ।। २ ।।

एक बार जो मन से जाये, ''बारम्बार बुलाता है''-३,
चुम्बक बनके नये भगत को, ''दर पे खींच बुलाता है''-३,
बन कर माली, करे रुखाली-२, बगिया हो गुलजार ।। ३ ।।

नाम सुमिर ले श्याम नाम में, ''बड़े गजब की शक्ति है''-३
'हर्ष' कहे फिर बंदे तेरी, 'भव सागर से मुक्ति है''-३,
छोड़ दे प्यारे, श्याम सहारे-२, जीवन के दिन चार ।। ४ ।।

(तर्ज : चिट्ठी आई है...)

चिट्ठी आई है आई है चिट्ठी आई है-२,
बड़े दिनों के बाद, मेरे श्याम धणी को आज-२,
भगत की याद सताई है, चिट्ठी आई है... ।। टेर ।।

फागुन महिना आन चला है, श्याम का ये सन्देश मिला है,
दूर देश में रहने वाले, श्याम धणी के ओ मतवाले,
नीन्द से उठ अब जाग जरा तू, सोया है क्यूँ आज भला तू,
मोहमाया में फूल गया क्या, वादा किया वो भूल गया क्या,
फिर आऊँगा, दर आऊँगा, दर्श तुम्हारा मैं पाऊँगा,
चिट्ठी आई है... ।। १ ।।

खूब सजी खाटू की गलियाँ, महक रही बागों में कलियाँ,
छाई है फागुन की मस्ती, गाँव गाँव और बस्ती बस्ती,
भगतों के टोले हैं आते, आकर के सब धूम मचाते,
सब आये पर तू नहीं आया, कैसे मुझको भूल तू पाया,
लेकिन मैं ना भूला तुझको, याद सताये तेरी मुझको,
रंग अबीर उड़े है काफी, तेरा आना रह गया बाकी,
चिट्ठी आई है... ।। २ ।।

(2)

सबसे पहले तू ही आया, इक इक करके सबको लाया,
बंद किया क्यूँ तूने आना, समझ लिया मुझको बेगाना,
याद है तेरा दर पे आना, मीठे मीठे भजन सुनाना,
तू नहीं आया तेरा क्या है, लेकिन मेरा हाल बुरा है,
भगतों की कोई कमी नहीं है, तेरी सूरत मन में बसी है,
जैसी तूने प्रीत दिखाई, दिल से जाती नहीं भुलाई,
'हर्ष' बुलाऊँ दौड़ के आजा, सारे बन्धन तोड़ के आजा-२,
आजा अँखिया तरस रही है, तेरे खातिर बरस रही है,
चिट्ठी आई है... ।। ३ ।।

'हर्ष' कहता ऐ दिवानों श्याम से कुछ तो डरो ।
देखता वो हर करम को ऐसा तुम कुछ ना करो ।।
छोड़ कर सारी बुराई श्याम का गुणगान कर ।
पीछे की सारी भुलादे आगे का सामान कर ।।

(तर्ज : मैं तेरे पीछे रह गई...)

खाली झोली लेके सेवक दर तेरे आया,
दिल में मेरे आशाओं के दीप जला लाया,
मुझको भी मिल जाये थोड़ी करूणा की छाया,
मुरादें पूरी करदे शीश के दानी ।। टेर ।।

भगत ने दर पे तेरे, अरज ये आज लगाई,
सुना है मैंने दाता, सदा तू करे सुनाई,
मेरी भी सुन लेना बाबा, चौखट पे आया-२,
लीले वाले जान गया हूँ, मैं तेरी माया,
मुझको भी मिल जाये थोड़ी, करूणा की छाया,
मुरादें पूरी करदे शीश के दानी ।। १ ।।

(2)

मुझे तो कोई रस्ता, पड़े ना आज दिखाई,
तुझे तो करनी होगी, भगत की आज सुनाई,
आँखों में आँसू की गंगा, लेकर मैं आया-२,
अपने सेवक को क्यूँ बाबा, तूने बिसराया,
मुझको भी मिल जाये थोड़ी, करूणा की छाया,
मुरादें पूरी करदे शीश के दानी ।। २ ।।

मुझे जो कहना था वो, तुझे सब कहके छोड़ा,
तुझे जो करना हो वो, तेरी मरजी पर छोड़ा,
'हर्ष' कहे जिसने जो चाहा, तुझसे ही पाया-२,
बड़ी उमींदे लेकर बाबा, दर तेरे आया,
मुझको भी मिल जाये थोड़ी, करूणा की छाया,
मुरादें पूरी करदे शीश के दानी ।। ३ ।।

--- o o o ---

(तर्ज : झूम बराबर झूम ''कव्वाली'')

दोहा : बिगड़ी बनेगी ऽऽऽऽ फागुन में खाटू जाने से ।
चैन मिल जायेगा चौखट पे सिर झुकाने से ।।

धूम मची है धूम रे साथी धूम मची है धूम-२,
फागुन आया ऽऽऽऽ, मस्ती लाया ऽऽऽऽ-२,
मस्ती में तू झूम झूम झूम ।। टेर ।।

आज श्री श्याम के दरबार तू रुखसत करले,
रंग और अबीर से प्यारे तू झोली भरले,
मेला लगता है वहाँ श्याम के दिवानों का,
रंग जमता है वहाँ श्याम के निशानों का,
नंगे पैरों ही सभी रिगंस से जाते हैं,
श्याम महिमा को सभी मिलके वहाँ गाते हैं,
हाथ में चंग लिये गुणगान सभी करते हैं,
रंग चेहरों पे वहाँ आपस में मलते हैं,
श्याम का नाम जुबाँ पर सभी के होता है,
कोई हँसता है कोई बस खुशी से रोता है,

(2)

श्याम सरकार के दरबार सबको जाना है-२,
शीश के दानी के चरणों में सिर झुकाना है-२,
श्याम का प्यारे, रंग चढ़ा रे-२,
बनके जोगी घूम घूम घूम ।। १ ।।

सारी दुनिया में मेरे श्याम का डंका बजता,
दीन दुखियों की सदा सावराँ झोली भरता,
हारे का साथी है निर्बल का ये सहारा है,
अटकी नैया को सदा देता ये किनारा है,
जिन्दगी क्या है हरेक पग पे यहाँ धोखा है,
पीछे पछतायेगा भजले यही तो मौका है,
मन से जिसने भी भजा वो तो भव पार हुआ,
श्याम की किरपा से कितनों का ही उद्धार हुआ,
भक्तगण श्याम का पैगाम जब भी पाते हैं,
दौड़ पड़ते हैं और रुक नहीं वो पाते हैं,
भरके पिचकारी तुझे श्याम के दर जाना है-२,
श्याम के भक्तों को जाकर के रंग लगाना है-२,
आज बुलाये, खाटू वाला-२,
चौखट को जा चूम चूम चूम ।। २ ।।

(3)

जो भी फाल्गुन में मेरे श्याम के दर जाता है,
मन की मुरादे मेरे श्याम से वो पाता है,
श्याम के कुण्ड में जो जाके स्नान करते हैं,
कोढी का कोढ़ मिटे और पाप कटते हैं,
फागुन में सेठ श्याम का खजाना लुटता है,
द्वार पे जाये जो उनकी ये झोली भरता है,
लाखों लाखों दिवाने श्याम के दर जाते हैं,
मस्तियाँ श्याम की चौखट से लूट लाते हैं,
हरेक दिल में वहाँ श्याम की मस्ती छाई,
तू भी जाकर के जरा देख श्याम सकलाई,
फागुन में श्याम के दरबार जो तू जायेगा-२,
'हर्ष' का दावा है हर बार दौड़ा आयेगा-२,
दर पे खुलेगी, किस्मत तेरी-२,
मस्ती में फिर घूम घूम घूम ।। ३ ।।

(तर्ज : ऐ गणेश के पापा...)

मतना तीखी नैण कटारी मारे श्याम सलूणा,
बात मेरी मान ले रे,
सीधी कालजिये के पार उतारे श्याम सलूणा,
बात मेरी मान ले रे ।। टेर ।।

टेढ़ी मेढ़ी चाल चाले, जियो भरमावे,
बणके दिवानो डोलूँ, कुछ नहीं भावे,
मतना प्रेमीड़ा पर जुलुम गुजारे श्याम सलूणा,
बात मेरी मान ले रे ।। १ ।।

साँवलो सो मुखड़ो है, लट घुँघराली,
मीठी मुस्कान तेरी, होठ सोवे लाली,
मतना भगताँ ऊपर डोरा डाले श्याम सलूणा,
बात मेरी मान ले रे ।। २ ।।

निजराँ सुँ बचके रहिजे, भगताँ रा मीत रे,
'हर्ष' लगाद्यूँ तेरे, काजल की लीक रे,
सेवक बारी बारी निजर उतारे, श्याम सलूणा,
बात मेरी मान ले रे ।। ३ ।।

(तर्ज : तेरे हाथों की लकीर बदलेगी...)

तूने ऐसा दरबार नहीं देखा,
बाबा जैसा दिलदार नहीं देखा,
तू जाके इकबार देख ले,
मेरे श्याम सा नहीं कोई दूजा,
खाटू का दरबार देख ले ।। टेर ।।

बड़ा ही दातार कोई इसका न सानी है,
दानियों में दानी बाबा शीश का दानी है,
ये तो हारे को सहारा देने वाला,
डूबी नैया को किनारा देनेवाला,
तू जाके इकबार देखले,
मेरे श्याम सा नहीं कोई दूजा,
खाटू का दरबार देख ले ।। १ ।।

(2)

बिना बोले भगतों की सुनता पुकार है,
बिना मांगे सबके ये भरे भण्डार है,
जाके जिसने आवाज लगाई,
पल भर में ही करली सुनाई,
तू जाके इकबार देखले,
मेरे श्याम सा नहीं कोई दूजा,
खाटू का दरबार देख ले ।। २ ।।

''हर्ष'' कहे रे जाके इसे आजमाले,
मन की मुरादे मेरे बाबा जी से पाले,
तेरे दु:खड़े ये सारे हर लेगा,
तेरा बिगड़ा काम बनेगा,
तू जाके इकबार देखले,
मेरे श्याम सा नहीं कोई दूजा,
खाटू का दरबार देख ले ।। ३ ।।

(तर्ज : होलिया में उड़े रे....)

करले तू काम महान, उठाले बाबा श्याम को निशान,
सोचे रे काँई नादान, उठाले बाबा श्याम को निशान ।। टेर ।।

जितणी दूर सूं जो कोई ल्यावे, श्याम ने उतणो नीड़े पावे,
बीको हो जावे कल्याण ।। १ ।।

दुनियाँ सूँ जो हार के आवे, जीत को वर बाबा सूं पावे,
बाबो तो राखे बीको ध्यान ।। २ ।।

भाव भर्‌या जो भजन सुणावे, बाबो बीको साथ निभावे,
बाबा की माया ने पिछाण ।। ३ ।।

दुखियारा को कष्ट मिटावे, बाँझड़ली की गोद भरावे,
निर्धणियों होवे धनवान ।। ४ ।।

मनोकामना पूरण होवे, तन मन में शुद्धि भर जावे,
करले धणी का गुणगान ।। ५ ।।

'हर्ष' श्याम का गुण जो गावे, दुनिया में वो नाम कमावे,
बीकी तो राखे ऊँची शान ।। ६ ।।

(तर्ज : इक परदेशी मेरा...)

लीले घोड़े वाले ने कमाल कर दिया,
खाटू जो भी आया मालामाल कर दिया ।। टेर ।।

कलयुग का देवता, हारे का सहारा,
नंगे पैरों दौड़ा आया, जिसने पुकारा,
पल में भगत को निहाल कर दिया,
खाटू जो भी... ।। १ ।।

लीला मेरे साँवरे की, किसी ने न जानी,
दीनों के नाथ की है, दुनिया दिवानी,
शरणागत को श्यामजी ने लाल कर दिया,
खाटू जो भी... ।। २ ।।

सोचता क्या 'हर्ष' प्यारे, श्याम को मनाले,
खाटू धाम जाके तेरी, बिगड़ी बनाले,
श्रद्धा रखने वाले को खुशहाल कर दिया,
खाटू जो भी... ।। ३ ।।

(तर्ज : स्वरचित)

तेरा जो हमको, सहारा नहीं होता,
इस दुनिया में हम दीनों का, गुजारा न होता ।। टेर ।।

सारी दुनिया ने जिसे ठुकराया है,
लेकिन तूने उसको भी अपनाया है,
साथी जो तुमसा हमारा नहीं होता ।। इस जग में... ।। १ ।।

तेरे दम पे बाबा मैं इतराता हूँ,
हर पल तुझको पास मेरे मैं पाता हूँ,
कश्ति का तू जो किनारा नहीं होता ।। इस जग में... ।। २ ।।

तेरी रहमत की सदा ही छाया हो,
हर लेना जो 'हर्ष' पे संकट आया हो,
तेरी दया का इशारा नहीं होता ।। इस जग में... ।। ३ ।।

(तर्ज : हाय हाय ये मजबूरी...)

कलयुग के अवतारी, ओ बाबा लखदातारी,
तेरे द्वारे जो भी आये,
संकट उसके कट जाते वो बैठा मौज उड़ाये ।। टेर ।।

जिसने दरपे अर्ज लगाई, उसकी करी सुनाई,
लीले वाले श्याम तुम्हारी, बहुत बड़ी ''सकलाई''-३,
मन से जो भी नाम पुकारे, झटपट दौड़ा आये,
संकट उसके... ।। १ ।।

हर कोने में गूँज रहे हैं, तेरे जय जयकारे,
घर घर तेरी ज्योत जले है, हारे के 'रखवारे'-३,
तन मन जो भी करे समर्पण, उसका साथ निभाये,
संकट उसके... ।। २ ।।

अपने भगतों की किस्मत का, पल में खोले ताला,
'हर्ष' हमारी करे हिफाजत, बन करके 'रखवाला'-३,
श्रद्धा से जो श्री चरणों में, आकर शीश नवाये,
संकट उसके... ।। ३ ।।

(तर्ज : बुलवाले -२...)

बणवादे-२, म्हारी नगरी में मंदरियो बणवादे,
खाटू जैसो भवन निरालो-२,
तू भगतां रे नीड़े सी चिणवादे,
म्हारी नगरी में मंदरियो बणवादे ।। टेर ।।

रोजिना म्हें आवाँ ला,
थारा दरशण पावाँ ला,
चरणां माहीं धोक लगास्याँ-२,
थारे टाबरियां री मंसा तु पुरवादे ।। म्हारीं...

हर ग्यारस ने ज्योत जगावाँ,
बारस ने थारी धोक लगावाँ,
मीठा मीठा भजन सुणास्याँ-२,
चाहे चौखट पे भगतां ने नचवाले ।। म्हारी...

(2)

चुन चुन कर म्हें फुलड़ा ल्यावाँ,
सोणो सो सिणगार सजावाँ,
खीर चूरमो भोग लगास्याँ-२,
चाहे छप्पन परोसो तू लगवाले ।। म्हारी...

फागण में मेलो भरवास्यां,
मंदरिये ने खूब सजास्यां,
होली को सो स्वांग रचास्याँ-२,
तेरे बागे ने केशरिया रंगवाले ।। म्हारी...

मन में जोश घणो है भारी,
'हर्ष' म्हे चावां किरपा थारी,
अर्थ बिना बाबा कुछ नहीं होवे-२,
थारे भगतां री लाटरी खुलवादे ।। म्हारी...

(तर्ज : ''कव्वाली'' हाजी अली-२...)

दोहा : सर उठाके तूने मुझको, अब तलक देखा नहीं ।
माफ कर मेरी खता, तुमसा ना दूजा कोई ।।

– मुखड़ा –

आया हूँ दर पे तेरे, ''खाटू वाले''-२,
दुखड़े तू हरले मेरे, ''खाटू वाले''-२ ।। टेर ।।

– अन्तरा –

सुनता है बाबा तू सदा, भक्तों के दिल की बात,
तेरी दया का रख दे जरा, मेरे सिर पे हाथ,
बरसो से जिसको ढूँढ़ता था, सामने है वो,
आजा दयालू दे दे जरा, हारे हुये का साथ,
आग दिल में लगी है, बुझादेऽऽऽऽऽ,
आके प्यासे को पानी पिलादे-२,
मेरा गुलशन पड़ा है वीरानाऽऽऽऽऽ,
बाबा मन की कली तू खिलादे-२,
कबसे सोया है मेरा मुकद्दर,
इसे आकर जरा तू जगादे-२,
मैं पड़ा सजदे तेरे, 'खाटू वाले-२ ।। १ ।।

(2)

तूफान में हरदम मिला, नइया को किनारा,
आया हूँ लेके आसरा, दे मुझको सहारा,
दोहा :- मान गया तो कुछ भी ना रह पायेगा,
बालक तेरा जीते जी मर जायेगा,
तू ना सुने तो मेरी बता कौन सुनेगा ?
दामन रहा जो खाली तो, जग ये हँसेगा,
मेटो ये गम के फेरे, ''खाटू वाले–२'' ।। २ ।।

तुझे घाव अपने मैं, दिखा के रहूंगा,
'हर्ष' आज दुखड़े मैं, सुनाके रहूंगा,
बेटे के गम तुझको मिटाने पड़ेंगे,
अगर ना मिटे खुदको मिटा के रहूंगा,
भक्तों के दम पे तू इतराया है,
तुझको भगतों ने ही पुजवाया है,
भक्त ना होता तू कहां होता,
भगतों ने तुझको खुदा बनाया है,
गाऊँ मैं नगमे तेरे, ''खाटूवाले''-२ ।। ३ ।।

(तर्ज : गोरा गोरा गाल...)

छुक छुक करती रेल गाड़ी खाटू कानी चाली जी-२,
कि जै जैकार गुंजाओ जी बाबा की-२ ।। कोई... ।। टेर ।।

सबसूँ ऊँचा श्याम धणी ने सेवक ल्याय बिठाया,
बाबा जी की करे आरती छप्पन भोग लगाया,
गूँजे बाबा की जैकार, मुल्के बैठ्यो लखदातार-२,
थारी भोत घणी सकलाई जी बाबा जी ।। १ ।।

ढोलक ढफली चंग मजीरा सेवक आज बजावे,
झूमे नाचे भजन सुणावे ठुमका घणा लगावे,
छाई फागण की बहार, होवे इत्तर की बौछार-२,
थारी जै जै कार लगाई जी बाबा जी ।। २ ।।

भाँत भाँत का टेसण आवे, आवे है नर नारी,
श्याम घणी के सेवकियाँ की सेवा होवे भारी,
माचे होली की धमाल, उड़े रंग और गुलाल-२,
'हर्ष' म्हाँ पर मस्ती छाई जी बाबा जी ।। ३ ।।

(श्याम मंदिर जिर्णोद्धार के उपलक्ष में)

(तर्ज : सेठों की क्या करे नौकरी...)

नव निर्माण का लिया है बीड़ा, धर्म के पहरेदारों ने,
गूँज उठेगी श्याम हवेली, श्याम के जै जै कारों से ।। टेर ।।

भगतों में उल्लास बड़ा है, मंदिर बड़ा बनायें,
संगमरमर का भवन निराला, मीलों तक फैलायें,
लगे अलग दरबार श्याम का, और सभी दरबारों से ।। १ ।।

फागुन के मेले में सबको, दर्शन सुलभ हो जाये,
एक साथ मिल कई हजारों, सेवक दर्शन पाये,
नहीं पड़ेगा हमको लगना, मीलों लम्बी कतारों में ।। २ ।।

'हर्ष' कहे आओ सब मिल के, ऐसा भवन बनायें,
शीश के दानी श्याम का मंदिर, छोटा ना रह जाये,
श्याम ध्वजा फर फर फहराये, मंदिर की मिनारों पे ।। ३ ।।

(श्याम मंदिर जिर्णोद्धार के उपलक्ष में)

(तर्ज : कौन दिशा में लेके...)

खूब सजेगा खाटू वाले तेरा मंदिर-२,
होगा नवनिर्माण, होगें सपने साकार,
मेरे साँवरिया, साँवरिया,
भवन बनेगा बड़ा प्यारा बड़ा सुन्दर-२,
होगा नव निर्माण, होंगे सपने साकार,
मेरे साँवरिया, साँवरिया ।। टेर ।।

लाखों सेवक रोज नियम से, आते हैं तेरे द्वार होऽऽऽ,
छोटा पड़ता मंदिर तेरा, लगती भीड़ अपार होऽऽऽ,
फागुन में तेरी एक झलक को-२, तरसे है नर नार होऽऽऽ,
बड़ा ही सुलभ होगा अब तेरा दर्शन-२,
होगा नवनिर्माण... ।। १ ।।

(2)

श्याम बहादुर ने जो देखा, होगा सपन साकार होऽऽऽ,
आलूसिंह भी इसी घड़ी का, करते थे इन्तजार होऽऽऽ,
श्याम प्रभु का भवन निराला-२, होगा अब तैयार होऽऽऽ,
भगत करेंगे सारे मिल कर वंदन-२,
होगा नवनिर्माण... ।। २ ।।

पहल करी भगतों ने पीछे, मान गई सरकार होऽऽऽ,
तेरी महर हुई तो हो गया, प्रशासन तैयार होऽऽऽ,
'हर्ष' कहे सब मिल कर बोलो-२, श्याम की जै जैकार होऽऽऽ,
तन मन धन करो श्रद्धा से अर्पण-२,
होगा नवनिर्माण... ।। ३ ।।

भावना भक्ति इबादत और सेवा है कहाँ ।
हो खुले मन से समर्पण ऐसा अर्पण है कहाँ ।।
एक मण्डल खोल ले फिर श्याम तेरा हो गया ।
आपसी झगड़े में मेरा श्याम ही गुम हो गया ।।

(तर्ज : धरती धोरां री...)

मेलो आयो रे, मेलो आयो रे, मेलो आयो रे,
मेलो आयो भगतों चालो,
हेलो मारे खाटू हालो,
बेगा जाकर घूमर घालो,
मेलो आयो रे, मेलो आयो रे, मेलो आयो रे ।। टेर ।।

देखो चाली दुनिया सारी-२, हेलो मारे लखदातारी,
बेगा चालो करल्यो त्यारी, मेलो आयो रे,
रिंगस सूँ निशान उठास्याँ-२, खाटू पैदल सगला जास्याँ,
जाके मन्दिर ध्वजा चढ़ास्याँ,
मेलो आयो रे, मेलो आयो रे,मेलो आयो रे ।। १ ।।

बाबो माल लुटासी भारी-२, आई है लुटण की बारी,
झोली भर देसी दातारी, मेलो आयो रे,
जाके रंग गुलाल उड़ास्याँ-२, खाटू माँही धूम मचास्याँ,
मीठा-मीठा भजन सुणास्याँ,
मेलो आयो रे, मेलो आयो रे, मेलो आयो रे ।। २ ।।

(2)

गूँजे भगताँ की किलकारी-२, मुल्के साँवरियो गिरधारी,
जाँकी लीला जग सूँ न्यारी, मेलो आयो रे,
सागे 'हर्ष' ने भी ले जास्याँ-२, ढोलक ढपली चंग बजास्याँ,
होली की धमाल मचास्याँ,
मेलो आयो रे, मेलो आयो रे, मेलो आयो रे ।। ३ ।।

श्याम की तस्वीर मिलती हर किसी की जेब में ।
अब सिसकता साँवरा ऐसे भगत की कैद में ।।
आज कितनों ने शराफत कौड़ी बदले तौल दी ।
श्याम जी के नाम पर अपनी दुकानें खोल दी ।।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

चन्द ऐसे भी हैं जो श्रद्धा से सबकी खेलते ।
श्याम जी के नाम पे हम ढ़ोंग उनका झेलते ।।
साँवरे का हो न हो पर नाम अपना चाहिये ।
फिर सुबह अखबार में फोटो भी छपना चाहिये ।।

(तर्ज : रंग मत डारे रे साँवरिया...)

छम छम नाचे रे साँवरिया तेरो लीलो नाचे रे,
गल पटिये रा रुण झुणिया तो, रुण झुण बाजे रे ।। टेर ।।

लीलो रंगीलो तेरो भगतां रे मन भायो रे-२,
ठुमक ठुमक कर नाचे कैसो रंग जमायो रे,
छम छम नाचे रे... ।। १ ।।

श्याम बिहारी तेरो लीलो जग सूं न्यारो रे-२,
उछल उछल कर नाचे म्हाने लागे प्यारो रे,
छम छम नाचे रे... ।। २ ।।

श्याम सलूणो बैठ्यो मंद मंद मुस्कावे रे-२,
'हर्ष' तेरे लीले पर बाबा वारी जावे रे,
छम छम नाचे रे... ।। ३ ।।

(तर्ज : मिश्री का पेड़ लगादे...)

खाटू की टिकट कटादे रसिया,
श्याम की नगरिया प्यारी लागे ।। टेर ।।

रंग रंगीलो बठै श्याम विराजे-२,
मन मोहिणी-२, मुरत जादूगारी लागे,
श्याम की नगरिया प्यारी लागे ।। १ ।।

साँवलो सलुणों म्हारे हिवड़े भायो, म्हाँ पर गहरो रंग चढ़ायो,
या तो कान्हुड़े की-२, माया म्हाने सारी लागे,
श्याम की नगरिया प्यारी लागे ।। २ ।।

बेगी सी ढोला खाटू मैं जाऊँ, श्याम धणी रा दरशण पाऊँ,
म्हाने साँवरे की-२, सूरत कामणगारी लागे,
श्याम की नगरिया प्यारी लागे ।। ३ ।।

मैं तो इब म्हारे साँवरे के जास्यूँ,'हर्ष' भगत ने भी सागे ले जास्यूँ,
म्हारी श्याम जी सुँ-२, प्रीत पुराणी लागे,
श्याम की नगरिया प्यारी लागे ।। ४ ।।

(तर्ज : चाल चन्दा डागलिये पर...)

चाल गोरी फागणिये मे दोनू खाटू चालाँ ऐ-२,
कोई झुक झुक धोक लगास्याँ ऐ बाबा के-२,
थारे सागे खाटू चालूँ फागणिये में ढोला जी-२,
कोई गठजोड़े सूँ जास्याँ जी बाबा के-२ ।। टेर ।।

दर्जिड़े के जाकर थे निशान सिमाल्यो जी-२,
कोई मंदिर शिखर चढ़ास्याँ जी बाबा के-२ ।। १ ।।

पंसारी के जाकर ढोला मेवा मिसरी ल्याज्यो जी-२,
कोई जाकर भोग लगास्याँ जी बाबा के-२ ।। २ ।।

हलवाई से देसी घी का लाडू थे बणवाल्यो जी-२,
कोई सवामणी म्हें लगास्याँ जी बाबा के-२ ।। ३ ।।

सुनारा सूँ ''हर्ष' जाके, छत्तर थे ले आज्यो जी-२,
कोई दर पे जाय चढ़ास्याँ जी बाबा के-२ ।। ४ ।।

(तर्ज : घड़लो थामले देवरिया...)

देखो श्याम की अटरिया, पे लहरावे निशान,
लीले वाले साँवरे की या ही है पिछाण ।। टेर ।।

टोल्याँ की टोल्याँ लेकर लाम्बी लाम्बी झण्डी-२,
कोई ल्यावे म्हारे श्याम जी को प्यारो सो निशान,
लीले वाले साँवरे की या ही है पिछाण ।। १ ।।

रींगस सूँ लाखाँ सेवक खाटू पैदल आवे-२,
कोई गूँजे असमाना में श्री श्याम की जैकार,
लीले वाले साँवरे की या ही पिछाण ।। २ ।।

फागण में श्याम जी को मेलो भारी लागे-२,
कोई उड़े देखो खाटू माँही रंग गुलाल,
लीले वाले साँवरे की या ही है पिछाण ।। ३ ।।

'हर्ष' भगत सारा झूमे नाचे गावै-२,
कोई माचे देखो खाटू जी मैं होली की धमाल,
लीले वाले साँवरे की या ही है पिछाण ।। ४ ।।

(तर्ज : धमाल)

मान्ड्यो श्याम को रंगीलो उत्सव सगला आज्यो रे,
सगला आज्यो, सगला आज्यो, सगला आज्यो रे ।। टेर ।।

एक तो संदेशो जाके गणपत जी नै दीज्यो रे,
उत्सव माही रिद्ध सिद्ध सागे आता रहिज्यो रे ।। १ ।।

दूसरो संदेशो जाके शंकर जी ने दीज्यो रे,
गोरां, गण और नन्दी सागे आता रहिज्यो रे ।। २ ।।

तीसरो संदेशो जाके रघुनन्दन ने दीज्यो रे,
लिक्षमण, सीता, हनुमत सागे आता रहिज्यो रे ।। ३ ।।

चौथोड़ो संदेशो जाके अटल छत्र पै दीज्यो रे,
दुर्गा, काली, उमा, शारदा आता रहिज्यो रे ।। ४ ।।

आखिरी संदेशो जाके सब देवाँ ने दीज्यो रे,
'हर्ष' श्याम के उत्सव माही बेगा आज्यो रे ।। ५ ।।

(तर्ज : पणिहारी...)

चंग मजीरा बाज रह्या जी ''कोई नाचे नौ नौ ताल-२,
घूमर घाले जी सेवक श्याम का-२ ।। टेर ।।

फागण की छाई है बहार जी, ''उड़े रंग गुलाल''-२,
धूम मचावे जी सेवक श्याम का-२ ।। १ ।।

हाथाँ के माँही ले निशान जी, ''चाले टोल्याँ लेके आज''-२,
ठुमका लगावे जी सेवक श्याम का-२ ।। २ ।।

इत्तर की होवे रे बौछार जी ''देखो किर्तन माहीं आज''-२,
भजन सुणावे जी सेवक श्याम का-२ ।। ३ ।।

''हर्ष'' सलूणो लागे साँवरो जी ''लेवो निजराँ उतार''-२,
शीश झुकावे जी सेवक श्याम का-२ ।। ४ ।।

(तर्ज : चाँद चढ़्यो गिगनार...)

भक्त करे मनवार म्हाने, आज बुलाल्यो द्वार म्हारी,
सुण लिज्यो दातार,
भगत थारा तरसे छै जी तरसै छै ।। टेर ।।

खाटू रा सिरदार थारा, टाबर अरज गुजारे जी-२,
ले ले कर थारो नाम बाबा, कदस्यूँ बाट निहारे जी,
मतना करो उवाँर इब थे, थोड़ो करो विचार,
भगत थारा तरसे छै जी तरसै छै ।। १ ।।

मन में आस घणेरी लागी, इबकी दरपे जाँवा जी-२,
बिना हुकम के कैयाँ बाबा, थारा दरशण पाँवा जी,
सुणके आज पुकार बुलाल्यो, म्हाने भी दरबार,
भगत थारा तरसे छै जी तरसै छै ।। २ ।।

(2)

दिन दिन बीत्या जावे बाबा,कइयाँ देर लगाई जी-२,
टाबरियाँ की आस पुराओ, बेगा करो सुणाई जी,
नईया है मझधार म्हारो, करियो बेड़ो पार,
भगत थारा तरसे छै जी तरसै छै ।। ३ ।।

'हर्ष' कहवे सुपणे में बाबो, हेलो मार बुलायो रे-२,
कइयाँ देर लगावे बेटा, फागण नेडे आयो रे,
साँचो है दरबार श्यामजी, सुणली आज पुकार,
भगत थारा हरखे छै जी हरखे छै ।। ४ ।।

छोड़ कर झूठी नवाबी श्याम का जो हो गया ।
श्याम की कृपा से उसका नाम जग में हो गया ।।
'हर्ष' कहता दिल लगा कर श्याम को तू ध्यायेगा ।
एक दिन ड्योढ़ी पे तेरी श्याम चलकर आयेगा ।।

(तर्ज : मेलो तो देखवा ना जाबा दे ओ रसिया...)

इबकी तो श्यामजी के ''जाबा दे ओ रसिया''-२
इबकी तो श्यामजी के जायबा दे ।। टेर ।।

श्याम धणी री ढोला, ओल्यूं घणी आवे-२,
तो बेगो सो टिकट ''कटादे ओ रसिया''-२,
इबकी तो श्यामजी के जायबा दे ।। १ ।।

साँवली सूरत म्हारे, हिवणे में बसगी-२,
तो म्हाने भी दरश ''करादे ओ रसिया''-२,
इबकी तो श्यामजी के जायबा दे ।। २ ।।

खाटू नगरिया जास्यूँ, मन म्हारो तरसे-२,
तो म्हारी भी आस ''पुरादे ओ रसिया''-२,
इबकी तो श्यामजी के जायबा दे ।। ३ ।।

भगता रे सागे 'हर्ष' रोजिना तू जावे-२,
तो एकर म्हाने भी ''पुगादे ओ रसिया''-२,
इबकी तो श्यामजी के जायबा दे ।। ४ ।।

(तर्ज : कसमे वादे प्यार वफा...)

इतना बता ऐ मुरली वाले, दास तेरे क्यूँ रोते हैं,
तुमसे प्रीत लगाके अपना, होश भला क्यूँ खोते हैं ।। टेर ।।

सीने में जो जाग रहा वो, दर्द कभी भी ना सोता,
वरना मेरे मालिक तेरा, दास कभी भी ना रोता,
आँसू की लड़ियों से बाबा, चरण तुम्हारे धोते हैं ।। १ ।।

जितना देखूँ उतनी दाता, प्यास दरश की बढ़ती है,
हल्की हल्की टीस हमेशा, रह रह करके उठती है,
इंतजार में दर्श को तेरे, पल पल भारी होते हैं ।। २ ।।

ऐसा तुझमें क्या है बोलो, बिन डोरी कस लेते हो,
भगतों के भावों को बाबा, बिन बोले पढ़ लेते हो,
नाम तुम्हारा लेके उठते, तेरे नाम से सोते हैं ।। ३ ।।

'हर्ष' हमेशा यूँ ही बाबा, प्रीत हमारी बनी रहे,
होठ हँसे या रोये आँखे, चाह तुम्हारी बनी रहे,
अनजानी सी एक खुशी में, गम ये तेरा ढ़ोते हैं ।। ४ ।।

(तर्ज : जाने वाले इक संदेशा...)

किसने देखा उसको लेकिन, मन में भारी आस है,
खाटू वाला श्याम धणी हम, भगतों का विश्वास है ।। टेर ।।

अन्तर्यामी को सेवक तू, खोज रहा आकारों में,
नहीं मिलेगा मेरा बाबा, मंदिर की दिवारों में,
इक गरीब की आँख में मेरे, श्याम धणी का वास है ।। १ ।।

करमा के खीचड़ में बसता, मीरा के उस प्यार में,
नरसी की हुण्डी में बैठा, गज की करूण पुकार में,
सच्चे मन से नाम पुकारा, पल में हुआ आभास है ।। २ ।।

कहीं ज्योत में लीला घोड़ा, छम छम नाच दिखाता है,
जय श्री श्याम किसी सेवक की, रोटी पर छप जाता है,
यहीं कहीं बैठा वो छुप कर, निज भगतों के पास है ।। ३ ।।

छप्पन भोग कभी ना खाये, 'हर्ष' तुम्हें बतलाता है,
आडम्बर करने वाले का, गर्व हमेशा खाता है,
इसके आगे ढोंग करे जो, निश्चित उसका नाश है ।। ४ ।।

(तर्ज : म्हारा उड़ता पंछी...)

म्हारा लीला घोड़ा, श्याम सूं म्हाने मिलादे,
श्याम सूं म्हाने मिला दे, श्याम सूँ म्हाने मिलादे ।। टेर ।।

श्याम धणी री, याद सतावे, बाबाजी बिन, ओल्यूँ आवे,
कदसूं सेवक बाट निहारे-२,
जाकर बात बताजे, म्हारा लीला घोड़ा... ।। १ ।।

म्हारे मन रा, भाव बताजे, साँचो साँचो, हाल सुणाजे,
लीला घोड़ा बेगो आजे-२,
मनड़े री आस पुराजे, म्हारा लीला घोड़ा... ।। २ ।।

छम छम करतो, बेगो आज्या, श्याम धणी रा, दरश कराजा,
रोता ने तू धीर बन्धाजा-२,
श्याम ने सागे ल्याजे, म्हारा लीला घोड़ा... ।। ३ ।।

'हर्ष' कहवे, लीलो समझावे, भोला भगत, मत ना घबरावे,
बेगो सो श्री श्याम ने ल्याऊँ-२,
चरणां धोक लगाजे, म्हारा लीला घोड़ा... ।। ४ ।।

(तर्ज : बहुत प्यार करते हैं तुमको सनम...)

मेरे श्याम रख दे तू, घर में कदम,
दिले बेकरारी ये, हो जाये कम ।। टेर ।।

बिछाये खड़े हैं, पलकें हमारी,
रस्ता निहारे ये, आँखे बिचारी,
बेटों पे अपने तू, कर दे रहम ।। १ ।।

सूना है तुझ बिन, मेरा आशियाना,
अपनों को बाबा, इतना सता ना,
भगतों पे तेरे तू, ना कर सितम ।। २ ।।

अरजी तू सुनके, अरे लीले वाले,
'हर्ष' तू आ जा, मेरे मुरलीवाले,
वरना हमारा तो, निकलेगा दम ।। ३ ।।

(तर्ज : ना झटको जुल्फ से पानी...)

न बिखरा रूप का जलवा, दिवाने हार जायेंगे,
नजर के तीर मत छोड़ो, जिगर के पार जायेंगे ।। टेर ।।

ये नीली आँख ये पीले, वसन ये चान्द सा मुखड़ा,
दरश इक बर नहीं कान्हा, भगत हर बार चाहेंगे ।। १ ।।

हमारे होश ना वश में, नहीं कोई साँस पर काबू,
तेरी नजरों से अब मोहन, जिगर पे वार खायेंगे ।। २ ।।

तुम्हारे रूप ने हम पर, किया है बोलो क्या जादू,
पलक बुझने तलक तेरा, भगत दीदार चाहेंगे ।। ३ ।।

तेरे रूखसार के जलवे, सितम यूँ ढा रहे हम पे,
कसम से 'हर्ष' इक दिन तो, हमें ये मार जायेंगे ।। ४ ।।

(तर्ज : चाहूंगा मैं तुझे...)

कर दे जरा तू, श्याम हवाले,
कश्ति तेरी फिर, श्याम सम्भाले,
तुझको फिकर है कैसी-२ ।। टेर ।।

जिसपे महर, श्याम करे-२,
तूफां में, वो क्यूँ डरे-२,
सौंप देऽऽऽ पतवार, इसको एक बार,
आकर के ये निकाले-२ ।। १ ।।

तन मन तू, कर अर्पण-२,
लेले जरा, श्याम शरण,
सौंप दे ऽऽऽऽऽ, पतवार, इसको एक बार,
तकदीर तू जगाले-२ ।। २ ।।

'हर्ष' तुझे, इससे मिला,
अर्पण कर, कैसा गिला,
सौंप दे ऽऽऽऽऽ, पतवार, इसको एक बार,
बस प्रीत तू निभाल-२ ।। ३ ।।

(तर्ज : वो जब याद आये...)

कन्हैया ना आये, मगर याद आई,
बड़े दिल से हमने, पुकारा है तुमको, चले आओ मोहन,
तुझे है दुहाई ।। टेर ।।

हम बुरे हैं मगर, तेरे पायक सही,
तेरी धूली है हम, तेरे लायक नहीं,
घने गम के बादल, सताये हैं हमको,
तेरी याद ने अब तो, नींदे चुराई ।। १ ।।

ना सता यूँ हमें, हम तेरे साँवरे,
नैन रो रो थके, हो गये बावरे,
सही राह हमको, आकर दिखादे,
हमें आज कुछ ना, पड़ता दिखाई ।। २ ।।

'हर्ष' दिल की सदा, श्याम कैसे कहे,
आ बता दे हमें, दूरी कैसी सहे,
बिछा के ये पलके, दिवाने खड़े हैं,
मेरे श्याम आजा, करले सुनाई ।। ३ ।।

(तर्ज : जैसे निर्धन को मिले...)

मैं तो बंदा था किस्मत का मारा, श्याम तेरा मिला जो सहारा,
मेरी किस्मत का दाग धुल गया, मेरा साँवरा मुझे मिल गया ।।

मेरे अपनों ने मुझको सताया, मैंने खुद को अकेला ही पाया,
मेरे अपने हुए सब पराये, नहीं जाते हैं दिन वो भुलाये,
रोते दिल ने तुझे जब पुकारा, बनके आया तू मेरा सहारा,
मेरी किस्मत का द्वार खुल गया, मेरा साँवरा मुझे मिल गया ।। १ ।।

तू जो मिलता नहीं मेरे दाता, बोलो कैसे मैं जीवन बिताता,
मैंने दर दर की ठोकर है खाई, तेरी भक्ति यहाँ खींच लाई,
तेरे चरणों में पाया ठिकाना, श्याम तेरा हुआ मैं दिवाना,
मेरे हृदय का फूल खिल गया, मेरा साँवरा मुझे मिल गया ।। २ ।।

बिना पानी के नैया चले है, बिना बोले ही संकट टले है,
बिना माँगे ही झोली ये भरता, बिना पूछे ही कष्टों को हरता,
मेरे आँसूं यही पोंछ डाले, मेरा जीवन इसी के हवाले,
'हर्ष' गम का तूफान टल गया, मेरा साँवरा मुझे मिल गया ।। ३ ।।

(तर्ज : ओ जाने वाले हो सके तो...)

ओ जाने वाले साँवरे से जाके कहना,
दिन-रात तेरी याद में रोये दिवाना ।। टेर ।।

गिन गिन के तेरी आस में, मैं दिन ये गुजारूँ,
पथरा गई है आँख, तेरी राह मैं निहारूँ,
ये हाल मेरे दिल का, तू जाके बताना ।। १ ।।

घुट घुट के तेरी याद में, ऐ साँवरे मैं रोऊँ,
दिल में पड़े हैं छाले, किसे जाके मैं दिखाऊँ,
जो दिल में लगी आग उसे तू बुझाना ।। २ ।।

किस्मत में क्या लिखा नहीं, ये प्यार तेरा पाये,
कब आयेगी वो शुभ घड़ी, जो द्वार तू बुलाये,
गर मुझसे खता हो गई, उसको भुलाना ।। ३ ।।

चाह कर भी तेरे दर पे बाबा, क्यूँ ना जा मैं पाऊँ,
करदे जरा इशारा बाबा, दौड़ के मैं आऊँ,
ऐ श्याम तेरे 'हर्ष' को दर पे बुलाना ।। ३ ।।

(तर्ज : चिरमी)

चाव चढ्यो है मोकलो जी-२,
कोई नाचे भगत अपार, बाबाजी थारे किर्तन में ।। टेर ।।

सोणो सो दरबार लग्यो जी,
फूलां रो सिणगार सज्यो जी,
कोई उड़ रह्या इतर फुहार, बाबा जी थारे किर्तन में ।। १ ।।

टाबरिया थारी ज्योत जगाई,
भोग लगायो धोक लगाई,
कोई गावे मंगलचार, बाबाजी थारे किर्तन में ।। २ ।।

ग्यारस की या रात सुहाणी,
सेवकियाँ री प्रीत पुराणी,
कोई हो रही जै जै कार, बाबा जी थारे किर्तन में ।। ३ ।।

'हर्ष' बजावाँ चंग सुरीला,
थाने रिझावाँ श्याम रंगीला,
कोई निरखां बारम्बार, बाबा जी थारे किर्तन में ।। ४ ।।

(तर्ज : धमाल)

सुणले बिणजारा म्हारो कर दीजे, एक भोत जरूरी काम,
सुणले बिणजारा
खाटू जाके श्याम सूं म्हारा, कहिजे राम राम,
सुणले बिणजारा ।।

सेठ श्याम सूं जाकर कहिये, चाकर थारो तरसे जी,
दरसण ताँई ओल्यूँ आवे, इबतो आठू याम, सुणले बिणजारा ।।

जेठ की दोपहरी जइयाँ, लाय बदन में लागी जी,
ठण्डक पड़सी श्याम कुण्ड में, न्हाकर सुबह-शाम, सुणले बिणजारा ।।

महर निजर पायक पै करद्यो, खाटू धाम बुलाल्यो जी,
मुण्डो खोलूं तो निकले जी, बस थारो ही नाम, सुणले बिणजारा ।।

राम राम करतो डोलूं कद, श्याम को हेलो आवे जी,
'हर्ष' दास की आस पुराद्यो, के लागे थारा दाम, सुणले बिणजारा ।।

(तर्ज : थाने काजलियो...)

आयो फागणियो रंगीलो, हेलो मारे रे छबीलो-२,
चाल, खाटू नगरिया चालस्याँ ।। टेर ।।

पचरंगा निशान बणाओ जी,
ज्याँपे बाबा को नाम लिखाओ जी,
ओऽऽऽ, हाथाँ में लेर ''आपाँ पैदल जावांगा जी''-२,
ढोलक ढफली चंग बजावाँ, झूमा नाचाँ मौज मनावाँ,
चाल, खाटू नगरिया चालस्याँ ।। १ ।।

लेल्यो रंगा सू भर पिचकारी जी,
जाके रंग दीज्यो श्याम बिहारी जी,
ओऽऽऽ, बाबा सूं जाय ''आपां होली खेलांगा जी''-२,
अंतर केशर सूं नुहावाँ, गालाँ ऊपर रंग लगावाँ,
चाल, खाटू नगरिया चालस्याँ ।। २ ।।

बठे मेलो गजब को लागे जी,
सारे घर का ने लेल्यो सागे जी,
ओऽऽऽ, मेले में जाय ''आपाँ मौज उड़ावांगा जी''-२,
'हर्ष' बैठ्या के विचारो, बाबो भरसी रे भण्डारो,
चाल, खाटू नगरिया चालस्याँ ।। ३ ।।

तर्ज : चली काँवडियों की टोली...)

चढ्यो फागणिये को रंग, देखो नाचे अंग अंग,
सारे गोकुल में मस्ती सी छाई रे,
कान्हों बासुँरिया जोर की बजाई रे ।। टेर ।।

करके इशारो कान्हों, राधा ने बुलावे,
कान्हुड़े ने देख देख,राधा मुस्कावे,
भरी रंग पिचकारी-२, राधा कान्हुड़े पे मारी-२,
पीली पागड़ी ने केशरिया बणाई रे ।। कान्हों बांसुरिया... ।। १ ।।

रंग में रंग्योड़ो कान्हो, मुरली बजावे,
मुरली बजाके राधा, राणी ने रिझावे,
राधा दौड़ी दौड़ी आई-२, सारी सुध बिसराई-२,
ऐसी मीठी मीठी तान सुणाई रे ।। कान्हो बांसुरिया... ।। २ ।।

राधा की चुनरिया जो, सिर सूं सरकगी,
घबराई राधे राणी, कान्हां सूं लिपटगी,
राधे होले सूं शर्माई-२, सारी गूजरियाँ मुस्काई-२,
श्याम राधे जी ने अंग लगाई रे ।। कान्हो बांसुरिया... ।। ३ ।।

सोणी सी या प्यारी जोड़ी, सै के मन भाई,
निजरां उतारो 'हर्ष' लेवो रे बलाई,
माची होली की हुड़दंग-२, बाजे ढफली व चंग-२,
नाचे गोकुल का लोग लुगाई रे ।। कान्हा बांसुरिया... ।। ४ ।।

(राग रचयिता-बालकिशन शर्मा)

सुनले ओ जाने वाले, बाबा से कहना-२,
मुझको भी दरपे बुलाले, ओ खाटूवाले,
नंगे नंगे पैर बाबा, दौड़ा चला आऊँगा-२,
मुझको भी दरपे बुलाले, ओ खाटूवाले ।। टेर ।।

किस्मत का मारा हूँ जो, तूने भुलाया है,
कहदे खता क्या मेरी, काहे रूलाया है,
किरपा तू करदे मुझपे, दर्शन मैं पाऊँगा,
मुझको भी... ।। १ ।।

सबको बुलाया तूने, चौखट पे तेरी,
सुध बिसराई बाबा, तूने क्यूँ मेरी,
घुट घुट के यूँ ही बाबा, मैं मर जाऊँगा,
मुझको भी... ।। २ ।।

करदे महर मुझको, दर पे बुलाले,
'हर्ष' भगत को बाबा, गले से लगाले,
महिमा मैं तेरी बाबा, निश दिन गाऊँगा,
मुझको भी... ।। ३ ।।

(तर्ज : आयो सावणियो जरा सी गोरी...)

दोहा : पीली पीली पागड़ी पे, मलस्या लाल गुलाब ।
मेलो आयो बावला, बेगो खाटू चाल ।।

आयो फागणियो उठाल्यो, थारे हाथाँ में निशान,
आयो फागणियो ।। टेर ।।

खाटूवालो बाबो थाने, ''हेला मार बुलावे''-२, थाने,
फागणिये के मेले मांही, ''कैयां देर लगावे''-२, सेवक,
इब तो छोड़ के-२, सै काम मेरे स
ागे चालो रे,
आयो फागणियो... ।। १ ।।

पचरंगा निशान उठाकर, ''खाटू पैदल जास्याँ''-२, आपाँ,
नाचाँ कूदाँ मौज मनावाँ, ''मीठा भजन सुणास्याँ''-२, आपाँ,
क्याँकि आँट रे-२, भगत बेगा बेगा हालो रे,
आयो फागणियो... ।। २ ।।

फागणिये में श्याम धणी को, ''मेलो भारी लागे''-२, भाया,
मतना सोच विचार करे तू, ''होले मेरे सागे''-२, भाया,
'हर्ष' चालो रे-२, भगत जाके घूमर घालो रे,
आयो फागणियो... ।। ३ ।।

(तर्ज : हट कर बैठ्या जाट...)

झण्डा ले ले हाथ जाट तने, खाटू जाणा सै,
मंदरिये पे श्याम धणी के, जाय चढ़ाणा सै ।। टेर ।।

इक लाम्बी लाठी लेकर, भगतां के सागे होले,
खाटू पैदल जाकर के, तेरे पाप जाट तै धोले,
साँवलिये के जाकर तन्नै-२, प्रेम बढ़ाणा सै ।। १ ।।

तैं बणा चूरमा घर का, दो लाडू आज बणाले,
इक साँवरिये के खातिर, जाकर के भोग लगाले,
दूजा लाडू भूख लगे जद-२, तन्ने खाणा सै ।। २ ।।

भर ले रे आज बिलौणा, और ताजा दही बिलोले,
तैं काढ़ चूँटिया ताजा, डिब्बे में भरके ले ले,
श्याम धणी के माखन-मिश्री-२, भोग लगाणा सै ।। ३ ।।

सुण मंदरिये के आगे, भई लेण लगेगी लाम्बी,
अंटी ढीली छोड़े लो, चोरां की बणेली चाँदी,
पाकिट मारां तै भी खुद ने-२, जाट बचाणा सै ।। ४ ।।

जद तेरा नम्बर आवे, चरणां में धोक लगाइये,
तेरे मनड़े की बात्यां, बाबा ने जाट बताइये,
'हर्ष' श्याम ने जाकर दिल का-२, हाल सुणाणा सै ।। ५ ।।

(तर्ज : ताऊ बाँध ले सामान...)

देख देख भगतां ने मन में, लाडू फुटे सै-२,
इब तो सुपणे मैं भी स्याणी, मन्नै खाटू दिखे सै ।। टेर ।।

काम काज में जी ना लागे, मेला नेड़े आग्या,
देख जाटणी मेरे पै के, रोग कसुता लाग्या,
खेतां मांही काम करूं तो देही दुटे सै,
इब तो सुपणे... ।। १ ।।

ऐसा प्रेम बढ़ाया इसतै, मेरा बैरी बणग्या,
लाख भुलाणां चाहूँ पर यो, गहरा भीतर बड़ग्या,
इब तो मेरा जीवन भर ना पिण्डा छुटे सै,
इब तो सुपणे... ।। २ ।।

साँची बात बताऊँ इसतै, प्रेम कदे ना करियो,
'हर्ष' कदे ना छोडेगा यो, चक्कर में ना पड़ियो,
देख साँवरा बान्ध लिया, भई मन्ने खुँटे सै,
इब तो सुपणे... ।। ३ ।।

(तर्ज : श्याम अलबेलो...)

दोहा : लेवां बिदाई साँवरा, हिवड़ो करे पुकार ।
थाँ बिन कैयाँ आवड़े, साँवलिया सरकार ।।

आँख्याँ भर आई, आँख्याँ भर आई-२,
फागण की बारस बीती, होसी बिदाई ।। टेर ।।

फागण के मेले माही, घणो सुख पायो रे,
जाँवती बखत म्हारो, हिवड़ो भर आयो रे,
कैयां म्हें सह पाँवाला-२, थाँसू जुदाई ।। १ ।।

बित्योड़ा दिनां ने बोलो, कैयाँ भुलावाँ जी,
मनड़े री पीड़ा बाबा, कीने सुणावाँ जी,
जग के आगे रोणे सूँ-२, होसी हँसाई ।। २ ।।

कुणसी या रीत थारी, पहल्यां हँसावे रे,
भगतां ने प्रीत थारी, पाछे रूलावे रे,
मनड़े में म्हारे होवे-२, कैयाँ समाई ।। ३ ।।

राजी राजी जारे बेटा, बाबो मुण्डो खोले है,
'हर्ष' थारे मन की जाणू, साँवरो यूँ बोले है,
बेगो बेगो आतो रहिजे-२, करस्यूं सुणाई ।। ४ ।।

(तर्ज : पल्लो लटके...)

झोली भरसी ओ भाया झोली भरसी,
खुल्यो है बाबा को दरबार थारी झोली भरसी ।। टेर ।।

श्याम निशान उठा हाथां में जैकारो गुजाँओ,
रस्तो पल में कट जासी जी मत ना देर लगाओ ।। १ ।।

ऐसो लखदातारी म्हेतो नाय सुण्यो ना देख्यो,
पलक मून्दता बदले थारो यो करमा को लेखो ।। २ ।।

कान्हुड़े की मूरत भगतो हिवड़े बीच बसाल्यो,
सालूसाल बुलासी थाने एक निशान चढ़ाल्यो ।। ३ ।।

''हर्ष'' कहवे फागण के माही खाटू जो भी जावे,
श्याम धणी की किरपा सूँ बो बैठ्यो मौज उड़ावे ।। ४ ।।

(तर्ज : दुनिया चले ना...)

देखना चाहो तो चमत्कार देख लो,
श्याम जी का सच्चा दरबार देख लो ।। टेर ।।

हारे का साथ निभाते हैं,
ठुकराये को अपनाते हैं,
नजरों से जाके इक बार देख लो ।। १ ।।

याचक की झोली भरते हैं,
भगतों के संकट हरते हैं,
बिना मांगें देता सरकार देख लो ।। २ ।।

मन से जो बाबा को ध्याओगे,
पल भर में परचा पाओगे,
सुन लेगा लीले का सवार देख लो ।। ३ ।।

बाबा के जैसा न दानी है,
इनका न कोई सानी है,
''हर्ष'' दया का भण्डार देख लो ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : ओल्यूं)

म्हारा खाटूवाला धणिया, थारी याद सतावे जी,
ओल्यूं आवे जी श्याम थारी ओल्यूं आवे जी ।। टेर ।।

होठं खुले तो निकले बाबा, बस थारो ही नाम,
टाबरियां ने भूल गया थे, क्यूं म्हारा घनश्याम,
म्हाने क्यूं इतणा तरसाओ-२, आके धीर बंधाओ जी ।। १ ।।

घाल आँगली बन्द कर्‌या थे, कइयां थारा कान,
भूल चूक की माफी देद्‌यो, बालक हाँ नादान,
म्हारा देव दया दिखलाओ-२, म्हाने दर्श दिखाओ जी ।। २ ।।

थारे होतां म्हे दुख पावाँ, जगती घाले हाँसी,
हूक उठे हिवड़े के माहीं, कद म्हारो बाबो आसी,
कह्‌वे ''हर्ष'' थे बेगा आओ-२, म्हापे दया दिखाओ जी ।। ३ ।।

श्री श्यामजी की आरती

ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे ।
खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे ।। ॐ जय।।

रतन जड़ित सिंहासन, सिर पर चंवर ढुरे ।
तन केशरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े ।। ॐ जय ।।

गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे ।
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जले ।। ॐ जय ।।

मोदक खीर चूरमा, सुवरण थाल भरे ।
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ।। ॐ जय ।।

झांझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धुरै ।
भक्त आरती गावे, जय-जय कार करे ।। ॐ जय ।।

जो ध्यावे फल पावे, सब दुख से उबरे ।
सेवक जन निज मुख से, श्री श्याम-श्याम उचरे ।। ॐजय ।।

श्री श्याम बिहारी जी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत 'आलूसिंह' स्वामी, मनवाछिंत फल पावे ।। ॐ जय ।।

जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे ।
निज भक्तों के तुमने, पूरण काम करे ।। ॐ जय ।।